रंगीला रसूल

(हज़रत मौहम्मद साहब की "पवित्र" जीवनी)

लेखक
आचार्य पण्डित चमूपति,

प्रकाशक
शहीदेआज़म महाशय राजपाल,

कसम खुदा की ! अपने प्यारे नबी की शान में अगर इस जुबाँ से कोई गुस्ताखी हो जाये तो वह जुबाँ जल जाये !

या अल्लाह ! वो मन्जर दिखाने से पहले तू मुझे इस दुनिया ज़हान से उठा ले, ये दीगर बात है कि मेरे प्यारे रसूल में आखिर क्या बात नही थी ? अरे दुनियाँ क्या जाने पीड़..... ?

प्रकाशक : मौहम्मद रफ़ी, तरकारी मण्ड़ी, दिल्ली- ६,

रंगीला रसूल

(हजरत मौहम्मद साहब की "पवित्र" जीवनी)

प्रकाशक :
शहीदेआज़म महाशय राजपाल,
लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान)

लेखक :
आचार्य पण्डित चमूपति
(एम०ए०)

इस पवित्र पुस्तक को पाक-साफ और शुद्ध होकर पढ़ें !

कसम खुदा की ! अपने प्यारे नबी की शान में अगर इस जुबाँ से कोई गुस्ताखी हो जाये तो वह जुबाँ जल जाये !

या अल्लाह ! वो मन्ज़र दिखाने से पहले तू मुझे इस दुनिया ज़हान से उठा ले, ये दीगर बात है कि मेरे प्यारे रसूल में आखिर क्या बात नहीं थी ? अरे दुनियाँ क्या जाने पीड़............ ?

कौम का खादिम -

"प्रकाशक"

प्रचारक : मौहम्मद रफ़ी, तरकारी मण्डी, दिल्ली-६

प्रकाशक

शहीदेआज़म महाशय राजपाल,

लाहौर

सम्पादक

मौहम्मद हिज़बुल्लाह

मूल्य : ३० रूपये मात्र

मुख्य वितरक :

"मौहम्मद रफ़ी"

तरकारी मण्डी, पो० बाक्स-४२०

दिल्ली-६

नोट : सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है ।

"समर्पण"

उस महान योद्धा, साहसी, विद्वान प्रकाशक को यह कृति समर्पित है जिसने संसार के मानव मात्र को "हजरत मौहम्मद साहब" के वास्तविक जीवन चरित्र को प्रकाशित करा कर सही दिग्दर्शन कराया तथा जिसके निमित्त स्वयं छुरा खाकर शहीद हो गये, ऐसी उस पुण्यात्मा को मेरा शत्-शत् वन्दन है।

लेखक -

"चमूपति एम०ए०"

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने हजरत मौहम्मद साहब के जीवन को पच्चीस वर्ष के बाद से आरम्भ किया है, उससे पहले का कोई वर्णन नहीं दिया गया है, अतः मैं एक सम्पादक की हैसियत से पाठकों की जानकारी के लिए संक्षेप में जन्म से पच्चीस वर्ष तक के जीवन से परिचित कराना मैं अपना पावन कर्त्तव्य समझता हूँ।

हजरत मौहम्मद के पिता का नाम अब्दुल्लाह था, जो अब्दुल मुतालिब के बेटे थे, आप कुरैश खानदान से ताल्लुक रखते थे, जो अरब का एक प्रमुख वंश था तथा तमाम वंशजों में अपना प्रमुख स्थान रखता था, आपका जन्म १२ रबीउल, दिन सोमवार, (११ नवम्बर) सन् ५६९ ई० को मक्के में हुआ। आपके वालिद (पिता) अब्दुल्लाह आपके जन्म से पूर्व ही परलोक सिधार गये थे। अतः आपका आरम्भिक पालन पोषण आपके दादा अब्दुल मुतालिब द्वारा हुआ, उनके मरने के बाद (तब आपकी उम्र मात्र आठ वर्ष की थी) आपके चचा हजरत अबू तालिब ने आपकी परवरिश की।

आपकी माता हजरत आमीना ने अपना दूध पिला कर बड़ा किया परन्तु वहां के रीति रिवाज के अनुसार कुछ समय के लिए वहां के नजदीक के गांव में शारीरिक व बौद्धिक

उन्नति के लिए एक महिला जिसका नाम हलीमा सादिया था, के सानिध्य में भेज दिया । गांव से वापिस लौटने पर थोड़े समय बाद ही आपकी माता का देहान्त हो गया । अब सारी जिम्मेवारी आपके चचा अबू तालिब के ऊपर आ गयी, चचा का व्यापार था, आपको भी अपने व्यापार में अपने ही साथ लगा लिया, तथा बकरियां चराने का कार्य दिया गया । इसी तरह बकरियां चराते-चराते समय बीत गया और आपने जवानी में कदम रक्खा, आपको खुदा ने गजब का हुस्न, बांका शरीर, शुद्ध हृदय व दिल में ईमानदारी बख्शी, आपका सारा जीवन गरीबी और संघर्ष में ही बीता, मां का साया भी बचपन में ही उठ गया था । बाप का प्यार क्या होता है ? इसका तो कभी अनुभव ही नहीं हुआ ।

पच्चीसवें वर्ष में एक धनी बेवा (विधवा) महिला खदीजा जो उस समय चालीस वर्ष की थी, की आंख हजरत से लड़ गयी और ये हजरत भी उसे अपना दिल दे बैठे, इनकी भी पच्चीस साल बाद ही लाटरी सी खुली थी, जिस प्यार के लिए बेचारे पच्चीस साल तक तरसते रहे, वह सारा प्यार जो पत्नी और मां दोनों के रूप में सांझा प्राप्त हुआ, इससे बड़ा और सौभाग्य क्या हो सकता था ? उस समय तो अगर खदीजा की आयु साठ वर्ष भी होती तो भी हजरत उसका प्रस्ताव न ठुकराते ।

अब आप आगे मौहम्मद साहब के पवित्र ? जीवन चरित्र

को बिना किसी भेद भाव के ध्यान पूर्वक पढ़िये और उनके जीवन से लाभ ? उठाइये। क्योंकि ऐसा शिक्षाप्रद जीवन वृत्त मुश्किल से ही किसी खुदा के पैगम्बर का पढ़ने को मिलेगा, जिस पर चलकर जन्नत ही जन्नत है। जिसमें प्रत्येक बात को किसी का दिल दुखाने की वजह से नहीं अपितु निष्पक्ष सप्रमाण ही उद्धृत किया गया है जिसे सभी मुसलमान भाई प्रमाण रूप में मानते हैं, अगर आप इसको दोजख का मार्ग समझते हैं तो आज ही दिये गये ईमान को वापिस ले सकते हैं, क्योंकि बिना वास्तविकता जाने किसी का मुरीद हो जाना स्वाभाविक है।

हमारे कुछ मुसलमान भाई नावाक्फियत की वजह से नाहक परेशान होते हैं, उन्हें चाहिये कि इस पुस्तक में दिये गये उदाहरणों व प्रमाणों को मूल पुस्तकों से मिलान करें, अगर यह बातें वास्तव में ठीक हैं, और हमारे मुसलमान भाई उन्हें जीवन के लिए हितकर नहीं मानते तो उन्हें नाराज न होकर ऐसी बेहुदी मान्यताओं को तिलान्जली दे देनी चाहिये, और जीवन के लिए जो सही उन्नति का मार्ग है उसे अपनाना चाहिये। मेरी उनसे यही अन्तिम गुजारिश है।

कौम का खादिम -

मौहम्मद हिज़बुल्लाह

(सम्पादक)

प्रस्तुत पुस्तक का इतिहास

सन् १९२३ ई० में मुसलमानों की ओर से एक पुस्तक "उन्नीसवीं सदी का महर्षि" प्रकाशित हुई । इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द का बहुत घिनौना तथा अपमानजनक चित्रण प्रस्तुत किया गया था । उन्हीं दिनों मुसलमानों ने श्री कृष्ण जी महाराज के सम्बन्ध में भी एक अति आपत्तिजनक पुस्तक प्रकाशित की उस पुस्तक का नाम था- "कृष्ण, तेरी गीता जलानी पड़ेगी"। आप पुस्तक के नाम से ही समझ सकते हैं कि उसमें क्या था ?

महाशय राजपाल जी जो ऋषि के अनन्य भक्त थे वह महर्षि दयानन्द और योगेश्वर कृष्ण का अपमान कदापि भी नहीं सह सकते थे । उन्होंने पुस्तक का उत्तर पुस्तक से ही देना उचित जाना इन घिनौनी पुस्तकों का उत्तर देने के लिए उन्होंने सन् १९२४ ई. में "रंगीला रसूल" नामक पुस्तक प्रकाशित की ।

यह पुस्तक उर्दू में छपी थी जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब की जीवनी व्यंगात्मक शैली में दी गई थी, परंन्तु घटनायें सभी इतिहास-सम्मत और प्रमाणिक थीं । पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर "दूध का दूध और पानी का पानी" छपा था । वास्तव में पुस्तक के लेखक "पं. चमूपति एम. ए." थे जो आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान एवम् बाद में गुरूकुल कांगड़ी के आचार्य बने थे । वे महाशय राजपाल जी के अभिन्न

मित्र थे, उनकी अनेक पुस्तकें राजपाल जी पहले भी प्रकाशित कर चुके थे। मुसलमानों की ओर से सम्भावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक पर अपना नाम नहीं देना चाहते थे उन्होंने महाशय राजपाल जी से यह वचन ले लिया कि चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति क्यों न बने वे किसी को भी इस पुस्तक के लेखक के रूप में उनका नाम नहीं बतायेंगे । महाशय राजपाल जी ने अपने इस वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की और चमूपति जी पर जरा भी आँच न आने दी ।

भाइयों ! एक वर्ष तक पुस्तक बिकती रही, परन्तु इसके विरूद्ध कोई शोर नहीं मचा। फिर महात्मा कहे जाने वाले मोहनदास करमचन्द गांधी ने अपनी मुस्लिम-परस्त नीति के अन्तर्गत ''यंग इन्डिया'' में इस पुस्तक के विरूद्ध एक लम्बी टिप्पणी लिख दी और वे योगेश्वर श्री कृष्ण तथा महर्षि दयानन्द के विरूद्ध लिखी गई पुस्तकों के विषय में तो बिल्कुल चुप रहे, बस ! फिर क्या था, एक ओर कट्टरवादी मुसलमानों और मुल्लाओं ने राजपाल जी के विरूद्ध आंदोलन छेड़ दिया, सन् १९२३ ई० में १५३-(अ) धारा के आधीन अभियोग चला दिया । जबकि योगेश्वर कृष्ण तथा महर्षि दयानन्द के विरूद्ध लिखी गई पुस्तकों के सम्बन्ध में कोई कार्यवाही नहीं हुई, यह अभियोग चार वर्ष तक चलता रहा । महाशय राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा एक सहस्त्र रूपये के जुर्माने का दण्ड सुनाया । इस आदेश के विरूद्ध सैशन में अपील करने पर कारावास के दण्ड में एक वर्ष की कटौती कर

दी गयी । इसके पश्चात् अभियोग हाईकोर्ट में गया । हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश ''श्री कवंर दिलीप सिंह'' जी ने महाशय राजपाल जी को ससम्मान दोषमुक्त कर दिया ।

सन् १९२४ ई में यह अभियोग आरम्भ हुआ था और ६ अप्रैल सन् १९२९ ई० दिन शनिवार को महाशय राजपाल जी का बलिदान हुआ । विशेष बात यह रही कि इन पांच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप वास्तविक लेखक का नाम बता दें तो हमें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी । यह बात उस समय के प्रमुख दैनिक-पत्र ''जमींदार'' में भी प्रकाशित हुई, परन्तु, राजपाल जी ने एक ही बात दोहरायी कि -''इस पुस्तक के लेखन तथा प्रकाशन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व मेरा ही है, अन्य किसी का नहीं ।'' उन्होंने जो वचन पं. चमूपति जी को दिया था। उसे अन्त तक निभाया ।

पहला प्रहार – मुसलमान उच्च न्यायालय के इस निर्णय से भड़क उठे और उन्होंने राजपाल जी के विरूद्ध जानलेवा आन्दोलन छेड़ दिया, जिसके फलस्वरूप २६ सितम्बर सन् १९२७ ई० को ''खुदाबख्श'' नामक एक मुसलमान ने उनकी दुकान पर पहुंच कर, जो लाहौर में अस्पताल रोड पर स्थित थी, उन पर प्राणघातक हमला कर दिया । आक्रमणकारी एक पहलवान था अतः उसके हाथों से महाशय राजपाल जी की सुरक्षा की कोई आशा नहीं थी । परन्तु मारने वाले से बचाने वाला महाबली होता है, यह लोकोक्ति इस प्रसंग में सत्य सिद्ध हुई और स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज और स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ जो

देवयोग से वहां उपस्थित थे, उन्होंने घातक को ऐसा कसकर दबोचा कि वह अपने क्रूरतापूर्ण निश्चय में सफल न हो सका। तथापि महाशय राजपाल जी बहुत बुरी तरह घायल हुये। घातक के विरूद्ध अभियोग चला और उसे सात वर्ष के कारावास का दण्ड मिला।

स्वामी सत्यानन्द जी महाराज पर आक्रमण–

महाशय राजपाल अपने घावों के कारण अस्पताल में ही थे कि उसी दुकान पर जिसमें महाशय राजपाल जी को घायल किया गया था, स्वामी सत्यानन्द जी बैठे थे। रविवार, आठ अक्टूबर सन् १९२७ ई० को "अब्दुल अजीज" नामक एक मुसलमान ने उन्हें महाशय राजपाल समझ कर पीछे से एक हाथ से चाकू व दूसरे हाथ में उस्तरे से प्राणघातक प्रहार कर दिया। घातक स्वामी जी को घायल करके भागना ही चाहता था कि अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुये पड़ोसी दुकान वाले महाशय "नानकचन्द जी कपूर" ने हत्यारे को पकड़ने का यत्न किया। इस प्रयास में वे भी घायल हो गये। उनकी पकड़ से घातक निकलना ही चाहता था कि महाशय नानकचन्द जी के छोटे भाई "लाला चुन्नीलाल" जी उस पर लपके और उसे पकड़ने का यत्न किया। उन्हें भी घायल करता हुआ हत्यारा भाग निकला उसके पीछे-२ शोर मचाते हुए अनेक लोग भागे जा रहे थे, अन्ततः हत्यारे को अनारकली बाजार के चौक में दबोच लिया गया, जो लाहौर का मुख्य बाजार माना जाता था। उस मुसलमान हमलावर को चौदह वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड और उसके साथ-साथ तीन वर्ष

के लिये शान्ति की जमानत (गारन्टी) का दण्ड सुनाया गया । स्वामी सत्यानन्द जी का पहले मेयो अस्पताल में और फिर निजी इलाज हुआ तब कहीं डेढ़ मास के पश्चात् उनके घाव ठीक हुये ।

अन्तिम प्रहार – महाशय राजपाल जी गुरूकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर गये हुये थे । वहां से पांच अप्रैल को लाहौर वापस लौटे । ६ अप्रैल सन् १९२९ ई० दिन शनिवार को दोपहर के समय महाशय जी अपनी दुकान में विश्राम कर रहे थे । उनका एक कर्मचारी पुस्तकों को व्यवस्था से रख रहा था । "इल्मदीन" नामक एक मुसलमान युवक अपनी कमीज के अन्दर दोधारी छुरा छिपाये हुए दुकान के भीतर आया । क्रूर हत्यारे ने आते ही लेटे हुए महाशय राजपाल जी के सीने में दोधारी छुरा घोंप दिया । वीर राजपाल जी का तत्काल ही प्राणान्त हो गया ।

हत्यारा अपनी जान बचाने के लिये बाहर भागा । महाशय जी का कर्मचारी भी शोर मचाता हुआ उसके पीछे दौड़ा । क्रूर हत्यारा भागकर "महाशय सीताराम" जी कि लकड़ी की टाल में जा घुसा । सीताराम जी के नवयुवक साहसी सपूत "महाशय विद्यारत्न" जी ने हत्यारे को कसकर अपनी भुजाओं में जकड़ लिया । इतिहास ने अपने आपको पुनः दोहराया । दिल्ली में "अब्दुल रशीद" ने वयोवृद्ध रूग्ण सन्यासी "स्वामी श्रद्धानन्द" जी पर तीन गोलियां चलाकर भागने का प्रयत्न किया तो "वीर धर्मपाल विद्यालंकार" जी ने वहीं उसको धर दबोचा, और तब तक उसे पकड़े रक्खा जब तक कि पुलिस ने आकर उसको बन्दी नहीं बना लिया । आज आर्यवीर विद्यारत्न महाशय

जी के हत्यारे इल्मदीन को कसकर पकड़े हुये थे । और वह छूटने के लिए छटपटा रहा था । उसने पूरा जोर लगाया, परन्तु आर्यवीर की पकड़ से निकल नहीं सका । इतने ही में और लोग वहां आ गये । पुलिस हत्यारे को पकड़ कर ले गयी ।

देखते ही देखते महाशय जी की दुकान पर हजारों व्यक्ति एकत्रित हो गये । देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी सरीखे नेता भी तत्काल वहां पहुंच गये । महाशय जी का शरीर उस समय तक ठंडा हो चुका था । उनकी धर्मपत्नी अपने पतिदेव के चरणों में अपना सिर रखकर शोकाकुल थीं । छुरा उनके शरीर से निकाला जा चुका था । शरीर को दुकान से बाहर लाकर रखा गया और पुलिस की लारी में अस्पताल ले जाया गया । वहां उनका पोस्टमार्टम किया गया। देवतास्वरूप ''भाई परमानन्द'' जी ने महाशय राजपाल जी के बलिदान पर अपने सम्पादकीय में ठीक ही लिखा था-

''आर्यसमाज के इतिहास में यह अपने ढंग का तीसरा बलिदान है'' ।

पहले धर्मवीर पण्डित लेखराम का बलिदान इसलिये हुआ कि वे वैदिक धर्म पर किये जाने वाले प्रत्येक आक्षेप का उत्तर देते थे । उन्होंने कभी भी किसी मत या पंथ के खण्डन में पहल नहीं की । सदैव उत्तर-प्रत्युत्तर देते रहे ।

दूसरा बड़ा बलिदान स्वामी श्रद्धानन्द जी का था । उनके बलिदान का कारण यह था कि उन्होंने भुलावे में आकर मुसलमान बन गये भाई-बहनों को, परिवारों को पुनः हिन्दू धर्म में

सम्मिलित करने का आन्दोलन चलाया और इस ढंग से स्वागत किया कि आर्य जाति में शुद्धि के लिये एक नया उत्साह उत्पन्न हो गया। विधर्मी उनके इस कार्य को सह न सके।

तीसरा बड़ा बलिदान महाशय राजपाल जी का है जिनका बलिदान इसलिए अद्वितीय है कि उनका जीवन लेने के लिये लगातार तीन बार आक्रमण किये गये। प्रथम बार २६ सितम्बर सन् १९२७ ई० को एक व्यक्ति खुदाबख्श ने किया। दूसरा आक्रमण ८ अक्टूबर सन् १९२७ ई० को उनकी दुकान पर बैठे हुए स्वामी सत्यानन्द जी पर एक व्यक्ति अब्दुल अजीज ने किया (जो उन्हें महाशय राजपाल समझ बैठा था) वे दोनों अपराधी कारागार में दण्ड भोग रहे हैं। इसके पश्चात अब डेढ़वर्ष बीत चुका है कि एक अन्य युवक इल्मदीन, जो न जाने कब से महाशय राजपाल जी के पीछे पड़ा हुआ था, एक तीखे दोधारी छुरे से उनकी हत्या करने में सफल हुआ है। जबकि जिस छोटी सी पुस्तक को लेकर महात्मा गांधी द्वारा महाशय राजपाल जी के विरूद्ध मुसलमान भाइयों की भावनाओं को भड़काया गया था, उसे प्रकाशित हुये तो अब चार वर्ष से भी अधिक समय बीत चुका है।

अन्तिम यात्रा– महाशय जी का पोस्टमार्टम तो उसी सांयकाल को हो गया था, परन्तु लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय लिया था कि अगले दिन हुतात्मा की शवयात्रा धूमधाम से निकाली जाये। पुलिस के मुसलमान अधिकारियों ने राज्याधिकारियों के हृदय में निराधार भय का भूत बिठा दिया कि

यदि शवयात्रा निकली तो शहर में दंगा फसाद हो जायेगा। डिप्टी कमिश्नर ने रातों-रात लाहौर में धारा १४४ लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जलसे-जलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

अगले दिन प्रातः सात बजे ही अस्पताल में श्रद्धालु आने आरम्भ हो गये। आठ बजे तक यह संख्या हजारों में पहुंच गयी। डिप्टी कमिश्नर से सम्पर्क करने पर पता चला कि वह शवयात्रा को रोकना नहीं चाहता था, परन्तु नगर में से शवयात्रा को ले जाने के लिये अनुमति देने को तैयार नहीं था। कई प्रतिष्ठित नेता डिप्टी कमिश्नर से मिले, परन्तु उसने अनुमति न दी। इन लोगों के खाली हाथ लौटने पर एकत्र भीड़ में रोष व जोश और भी बढ़ गया। भीड़ यह मांग कर रही थी कि शव को नगर के बीच में से ले जाने की अनुमति दी जाये। इसी संघर्ष में चार-पांच घण्टे निकल गये।

लगभग एक बजे उन्होंने अपना आदेश बदलने से इन्कार कर दिया। लोगों से कहा गया कि आप तो नगर के बीच में से ले जाने की अनुमति चाहते हैं परन्तु डिप्टी कमिश्नर नगर के बाहर से शव-यात्रा को ले जाने की अनुमति देते हैं। जो इसको नहीं मानते, वे लोग शान्ति से अपने घरों को चले जावें। सरकार जैसा ठीक समझेगी, शव का समुचित रीति से दाह-संस्कार कर देगी।

कुछ लोग घरों को चल दिये, परन्तु वह भीड़ जो खाली अर्थी और फूल लेकर हुतात्मा का शव लेने के लिये वहां उपस्थित थी, टस से मस न हुई। भीड़ इतनी अधिक थी कि जुलूस ही दिखाई दे रहा था। मेयो अस्पताल के दूसरे द्वार के सामने डण्डाधारी पुलिस

तथा घुड़सवार पुलिस नियुक्त थी। पुलिस ने आगे आकर लोगों को आगे बढ़ने से रोका। भीड़ में स्वाभाविक जोश था। भीड़ ने जयकारे लगाये। अधिकारी चिढ़ गये। अधिकारियों ने लाठी चार्ज की आज्ञा दे दी। पच्चीस व्यक्ति घायल हो गये। भीड़ फिर भी नहीं हटी, वहीं डटी रही। अधिकारियों से पुनः बातचीत हुई। पुलिस से कहा गया कि लोगों को इस मार्ग से अपने घरों को जाने दिया जाये। इतने में पुलिस ने फिर लाठी वर्षा कर दी। बड़ी निर्दयता से हृदयहीन अधिकारियों व सिपाहियों ने लोगों को पीटा। डेढ़ सौ व्यक्ति घायल हो गये। सांयकाल तक लोग भारत बिल्डिंग के प्रांगण में खड़े रहे। पुलिस वाले मार्ग रोके खड़े थे। शव अस्पताल में पड़ा रहा।

दूसरे दिन सरकारी अधिकारियों के सन्देश आने लगे। सरकार व आर्य नेताओं के बीच एक समझौता हुआ। सरकार को झुकना पड़ा और कुछ मांगें आर्यों को भी छोड़नी पड़ीं। ८ अप्रैल सन १९२९ ई० को महाशय राजपाल जी के शव को लाहौर के मुख्य बाजारों में से घुमाते हुए बड़ी ही धूमधाम के साथ शमशान भूमि पर ले जाया गया।

शवयात्रा कैसी थी- महाशय जी के बलिदान से आर्य-हिन्दू जाति में ऐसा जोश उत्पन्न हुआ जो देखते ही बनता था। शव-यात्रा के समय यह जोश देखकर सब में उत्साह का संचार हो रहा था।

साढ़े सात-आठ बजे तक अर्थी की सब व्यवस्था हो गयी। अनुमान लगाया गया कि पच्चीस हजार व्यक्ति शव-यात्रा में

सम्मिलित होकर शमशान-भूमि पहुंचे थे । लाहौर का मुख्य अनारकली बाजार सारा का सारा बन्द था । हिन्दुओं ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों की छतों से हुतात्मा के शव पर पुष्प वर्षा की । जनता का यह असाधारण उत्साह प्रमाणित कर रहा था कि हिन्दू अपने हुतात्माओं का कितना सम्मान करते हैं ?

बलिदान-स्थली (महाशय जी की दुकान) पर पहुंचते ही युवकों के गगनभेदी जयकारों से लाहौर गूंज उठा । भावुक हृदय श्रद्धालु फूट-फूटकर रोये । शमशान-भूमि पहुंचने में साढ़े तीन घण्टे लग गये । ठीक पौने बारह बजे हुतात्मा की नश्वर देह को चिता पर रखकर "महात्मा हंसराज" जी ने अग्नि लगायी । महाशय जी के ज्येष्ठ पुत्र "प्राणनाथ" तब ग्यारह वर्ष के बालक थे । वैदिक विधि के अनुसार वह चिता को अग्नि लगा सकते थे, परन्तु सब आर्य नेताओं ने तब यह निर्णय लिया कि समस्त आर्य हिन्दू समाज के प्रतिनिधि के रूप में - "महात्मा हंसराज जी ही चिता को अग्नि लगायेंगे"।

जब दाहकर्म समाप्त हो गया तो अपार जनसमूह (जिसमें देवियां भी थीं) शान्त होकर बैठ गया । ईश्वर स्तुति प्रार्थना "श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द" जी महाराज ने करवायी, प्रार्थना की समाप्ति पर भीड़ में से एकदम एक देवी उठी । उसकी गोदी में डेढ़ वर्ष का एक बालक था, जो आज विश्वनाथ के नाम से अपने पूर्वजों की भांति समाज का कार्य बढ़-चढ़ कर कर रहे हैं । यह देवी राजपाल जी की धर्मनिष्ठा साध्वी धर्मपत्नी थी । इस देवी ने बड़े हीं मार्मिक शब्दों में कहा-

"अपनी बहनों व भाईयों को कहना चाहती हूं कि मुझे अपने पति के इस प्रकार से मारे जाने का दुख अवश्य है, पर साथ ही मुझे उनके धर्म की वेदी पर बलिदान देने का अभिमान भी है। वे मरकर अपना नाम अमर कर गये हैं।"

पंजाब के सुप्रसिद्ध पत्रकार व कवि, महाशय "नानक चन्द" जी 'नाज' ने तब एक कविता लिखी थी जिसकी ये पंक्तियां उस समय के जोश का यथार्थ चित्रण करती हैं :-

फख्र से सर उनके आसमां तक हो गये।
हिन्दुओं ने जब तेरी अर्थी उठायी राजपाल ॥
फूल बरसाये शहीदों ने तेरी अर्थी पै खूब।
देवताओं ने तेरी 'जय-जय' बुलायी राजपाल ॥
हो हर इक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब।
जिस तरह तूने छुरी सीने पै खायी राजपाल ॥
तेरे कातिल पर न क्यों इस्लाम भेजे लानतें।
जब मुजम्मत कर रही है इक खुदाई राजपाल ॥
मैंने क्या देखा कि लाखों राजपाल उठने लगे।
दोस्तों ने लाश तेरी जब जलायी राजपाल ॥

कौम का खादिम -

मौहम्मद हिज़बुल्लाह

(सम्पादक)

नोट

इस पूरे जीवन चरित्र को बिना किसी भेद भाव के सप्रमाण लिखा गया है । जिससे साफ पता चलता है कि जिस सम्प्रदाय की बुनियाद रखने वाले ही स्वयं इतने पवित्र रहे हों कि जिनकी मिशाल इतिहास में अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलती । तो उनके उपदेश व सिद्धान्त कितने शिक्षाप्रद सिद्ध होगें ? पाठक स्वयं विचार करें ।

वितरक :-

"मौहम्मद रफी"

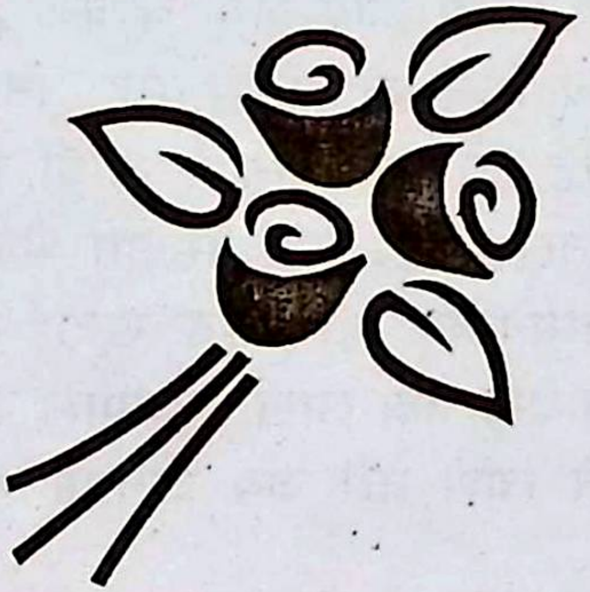

नोट :

कृपया पुस्तक के अंत में दी गई "मेरे प्यारे रसूल की कुछ रंगीली बातें" अवश्य पढ़िये । यह आपसे खास गुजारिश है ।

"सम्पादक"

"लाइलाहइल्लिलाह, मौहम्मद रसूल्लिलाह"

पैगम्बर की तारीफ़

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके ।
मैं तो जाऊँ अपने "रंगीले रसूल" के सदके ॥१॥

सदा बहार सजीला रसूल है मेरा
हों लाख पीर रसीला रसूल है मेरा
ज़हे जमाल छबीला रसूल है मेरा
रेहीने इश्क रंगीला रसूल है मेरा

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके ।
मैं तो जाऊँ अपने "रंगीले रसूल" के सदके ॥२॥

किसी की बिगड़ी बनाना है, ब्याह कर लेंगे
बुझा चिराग जलाना है, ब्याह कर लेंगे
किसी का रूप सुहाना है, ब्याह कर लेंगे
किसी के पास खजाना है, ब्याह कर लेंगे

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके ।
मैं तो जाऊँ अपने "रंगीले रसूल" के सदके ॥३॥

"चमूपति एम०ए०"

खुदा के अन्तिम पैगम्बर हज़रत मौहम्मद साहब का जीवन चरित्र

आरम्भ

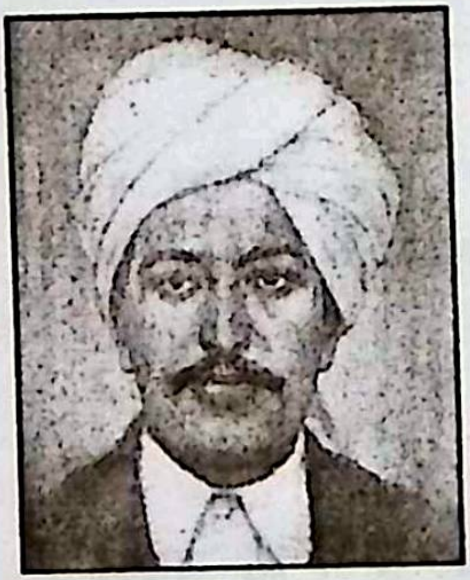

प्रकाशक :
शहीदेआज़म महाशय राजपाल,
लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान)

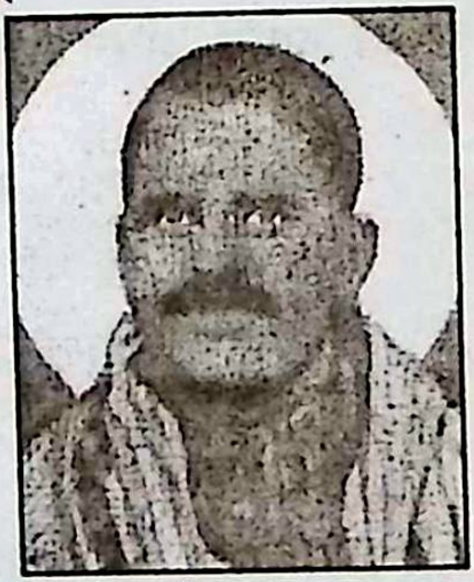

लेखक :
आचार्य पण्डित चमूपति
(एम०ए०)

बिस्मिल्लाहिरर्हमानरहीम..........

शुरू करता हूँ, "अल्लाह" के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

कसम खुदा की-इस पुस्तक में जो भी बात कही गयी है वह निहायत ही ईमानदारी और दयानतदारी के साथ पेश की गई है। यह मैं शपथपूर्वक ब्यान करता हूँ।

– "लेखक"

ख़ानेदार (गृहस्थ) पैगम्बर

मौहम्मद की अज़मत (बड़ाई) इसमें हैं कि वह ख़ानेदार गृहस्थ पैगम्बर है, मुसलमान भाई मौहम्मद की इस खुसूसियत (विशेषता) को बड़े अभिमान के साथ पेश करते हैं, कि देखो जो बात दूसरे पैगम्बरों में नहीं है वह मौहम्मद में है, यही मौहम्मद की फ़जीलत (तारीफ़) है । यह बात मेरे दिल में लगती है ।

''दयानन्द'' बाल ब्रह्मचारी है, वह देवता है, मैं भला एक मामूली आदमी उनके ब्रह्मचर्य को कहाँ पहुंचूँ?

''महात्मा बुद्ध'' ने शादी की, मगर घर से निकल गया, युवावस्था में औरत और बच्चों को अकेला छोड़कर साधु बन गया, मुझे न उस साधुता की चाह है, और न उसे अख्तियार करने का हौंसला है । ''ईसा'' ने घर बार बसाने का कोई झंझट ही मोल नहीं लिया ।

''मौहम्मद'' ने शादी की, नहीं ! नहीं !! बल्कि शादियाँ कीं, हर तरह की औरतों से शादियाँ की, बेवा से, कुंवारी से, बुढ़िया से, जवान से, हाँ ! हाँ !! एक नवयुवती से भी, शादी की । हर किस्म की शादी का रंग देखा, उसके भले बुरे को पढ़ा ही नहीं बल्कि उसने उसे आज़माया भी तथा बहुत ही बारीकी से उसे परखा भी ।

''मौहम्मद'' खुदा का एक अनुभवी अन्तिम पैगम्बर है । उसके इलहाम की बुनियाद उसका तजुरबा है, तजुरबा भी ऐसा कड़ुवा कि अलअमान, मौहम्मद ने उसे मीठा घूंट समझ कर पी

लिया, किसलिए ? सिर्फ़ सबके फ़ायदे के लिए और दूसरों को नसीहत देने के लिए। मौहम्मद की जिन्दगी शिक्षाप्रद है, उपदेशों से भरी हुई, और इबादतों से भरपूर, वाकई मौहम्मद एक खास ज़मात के लिए उनका "पथ प्रदर्शक" है।

मैं खा़नेदार ! मेरा पैगम्बर खानेदार (गृहस्थ) वह मेरा गुरू और मैं उसका चेला। उपनिषदों में लिखा है गुरूजनों के अच्छे गुणों को धारण करो और बुरी बातों को छोड़ दो। इसी नजरिये से हम आज घरबार वाले, रंगीले, छबीले, रसीले, रसूल की जिन्दगी की बाबत खानेदारी (गृहस्थाश्रम) पर एक रसीली निगाह डालना चाहते हैं। मुहम्मदी तथा गैर मुहम्मदी सब इसको पढ़ने में शरीक हो सकते हैं क्योंकि "मौहम्मद" तो मौहम्मदियों और गैरमुहम्मदियों अर्थात् दोनों का साँझा है।

ब्रह्मचारी (?) मौहम्मद

मौहम्मद की पहली शादी २५ साल की उमर में हुई यहाँ तो आर्य समाजियों को भी मानना होगा कि मौहम्मद ने शास्त्र के मुताबिक जिन्दगी का पहिला हिस्सा कुंवारे रहकर गुजारा, मौहम्मद ब्रह्मचारी था, और उसका हक था कि वह शादी करे।

हम सबसे पहले एक नजर मौहम्मद की उसी (ब्रह्मचर्य) अवस्था पर डालना चाहते हैं, क्योंकि दुनिया में ऐसे बदबूदार दिमाग वाले लोग भी हैं जो नाहक भले मानसों की आदतों पर तथा उनके कर्मो पर और उनके कथन पर बेवजह शक (सन्देह) करते हैं।

हम मौहम्मद को ब्रह्मचारी मानते हैं क्योंकि उसने इस बारे में अपनी शहादत (गवाही) आप दे रक्खी है, एक मुकाम पर आप कहते हैं कि एक रात मैं एक कुरैशी लड़के के साथ मिलकर रेवड़ (भेड़ आदि) चरा रहा था, मैंने उस लड़के से कहा कि अगर तू रेवड़ की पासबानी (निगाह बानी) करे तो मैं जाऊँ ? और जिस काम में नौजवान लोग रात गुजारते हैं मैं भी गुजार आऊँ ।

यह कहकर मौहम्मद मक्का चला गया । मगर यहाँ एक शादी की दावत ने उसकी तवज्जह (ध्यान) अपनी तरफ खींच ली और उसको नींद आ गई । एक और रात वह फिर इसी इरादे से मक्का पहुँचा । मगर स्वर्ग के प्रलोभनों ने उसके दिल को अपने काबू में कर लिया और उसे सोते-सोते सुबह हो गई ।

मौहम्मद कहता है कि इन दो वाक़यात के बाद मेरा दिल बुराई की तरफ नहीं बढ़ा ।

"हयात-ए-मौहम्मदी-म्योरसाहब कृत"

हमें मौहम्मद के कौल (कथन) पर पूरा विश्वास है, क्योंकि उसे हमामीन कहा गया है । हम मानते हैं कि, उसका दिल गुनाह के नतीजे से बचा हुआ था । दो ही दफा उसे शैतान ने बरगलाया अर्थात् पथ भ्रष्ट किया मगर ईश्वरीय प्रेरणा ही इसमें मददगार सिद्ध हुई और हमारा "रंगीला रसूल" इस गुमराही के गढ़ढे से बाल-बाल बच गया । उसने अमलन् अर्थात् शारीरिक रूप से गुनाह नहीं किया । मौहम्मद पूर्ण ब्रह्मचारी था, उसने २५ साल तक की उमर तक शादी नहीं की और अपनी जवानी की उमंगों के झकोरों से बचता रहा ।

माई खदीजा

हम ख़दीजा को "माई खदीजा" ही कहेंगे, क्योंकि उसकी उम्र ४० वर्ष की थी जब वह मौहम्मद के मकान (अन्तःपुर) में निकाह करके आई, बल्कि अगर सच्ची बात लिखी जाये तो यों कहिये कि मौहम्मद खुद उसके घर में गये थे। मौहम्मद २५ साल के थे। शकल और सूरत में खूबसूरत थे, नेक आदत थे, शरीफ घराने के ही नहीं बल्कि शरीफ ठिकाने के भी थे।

परन्तु खदीजा बेवा (विधवा) थी वह कुरैशी यानी मौहम्मद की जाति बिरादरी की थी, उसके दो पति मर चुके थे, वह बाल बच्चे वाली थी परन्तु मौहम्मद और उसकी उम्र का यह मुकाबला था कि खदीजा के पास बेशुमार दौलत थी, जब सौदागरों के झुण्ड गैरमुल्कों में जाते थे तो यह भी अपने एजेण्ट रवाना करती थी। खुदा बरकत देता था, तिजारत (व्यापार) में सवाया, ड्योढ़ा मुनाफा होता था। सारा मक्का उसे जानता था, शादियों की दरख्वास्तें भी कई बांके दिलचलों ने दी थी मगर वह अपनी दौलत और हालत पर सन्तुष्ट थी, व्यर्थ में वह दुनिया का इश्किया झंझट अपने सिर पर मोल नहीं लेना चाहती थी, क्योंकि उसने दुनिया के सब रंग देखे व बरते हुए थे।

एक साल उसने मौहम्मद को एजेण्ट बनाकर व्यापारियों के झुण्ड के साथ भेजा, वह आमिन (निर्भय) था, खुदा ने उसे व्यापाराना बुद्धि बख्शी थी नतीजतन औसत से ज्यादा लाभ कमाया। मकान की छत पर बैठी हुई खदीज़ा देख रही थी कि

सामने से एक शुतुर सवार आता हुआ मालूम हुआ, वह कौन था ? मौहम्मद ! मौहम्मद ने तिजारत का हिसाब दिया और अपनी अच्छी खासी उजरत लेकर रवाना हुआ । इसकी शरमदार आँखे, जरूरत से कम बोलना, कुदरती खूबसूरती और व्यापार का खरापन, बेतकल्लुफ की सादगी जो दिल में थी वही जुबान पर ! तथा वही अमल में, बस ! फिर क्या था ? अन्ततः बुढ़िया खदीजा के दिल पर यह बेसाख्तगी (स्वाभाविक रूप से) असर कर गई और उसे अपना दिल दे बैठी, तथा मन ही मन उसे अपनी जिन्दगी का शरीक (शोहर) बनाना चाहा ।

खदीजा (ताहरा) पवित्र और कमाल की खूबसूरती खुदा ने उसे बक्शी थी । लोग उसके हुस्न के तथा उसकी दौलत के परवाने थे परन्तु यहां पर वह खुद शमा के ऊपर परवाना बन के गिरी, फिर दुनिया में ऐसी कौन सी शमा हो सकती थी जो उसे गिरता हुआ देखती और चमक न उठती ? मुंह फेर लेती या उससे उलटा रूख दिखाती ? खदीजा का बाप जिन्दा था । उसकी तरफ से अंदेशा था कि वह रास्ते का रोड़ा बनेगा । इसी समय खदीजा ने एक दावत की, उसमें उसने अपने और मौहम्मद के खानदान वालों को निमन्त्रित किया, शराब ढलने लगी । खदीजा का बाप भी दावत में शामिल हुआ परन्तु वह हद से ज्यादा पी गया । बूढ़ा था, बहक उठा । यही वह मौका था जिसकी ताक में सब लोग थे, बस ! फिर क्या था, मौके का फायदा उठाते हुए तुरन्त खदीजा को शादी के कपड़े पहना दिये गये और मौहम्मद के साथ खदीजा

का निकाह हो गया। जब उसके बूढ़े वालिद को होश आया तो वह हक्का बक्का रह गया, मगर पक्षी पिंजरे से निकल चुका था, बड़े और बुजुर्गों का कहना मानना पड़ा, अन्ततः फिर खामोशी अख्तियार करके रह गया।

"हयात-ए-मौहम्मदी-म्योरसाहब कृत"

खैर "मौहम्मद" दूल्हा हुए, माई खदीजा के खाविन्द बन उसकी जानों माल के मालिक और रक्षक बने। बचपन में गरीब हो गये थे, बहुत दिनों तक माँ की ममता का सुख न देखा था। इस औरत से ब्याह कर लेने पर दोनों मुरादें मिल गई। मौहम्मद उसे चाहे जो भी कहे, परन्तु हम तो उसे माई खदीजा ही कहेंगे, वह हमारी माँ है और आर्य शास्त्रों में एक हालत में औरत को माँ कहा भी है। यह माई खदीजा की तीसरी शादी थी। माई खदीजा से मौहम्मद की छः सन्तानें हुई जिनमें दो लड़के और चार लड़कियाँ थी, पहला लड़का कासिम जो दो बरस का होकर मर गया और दूसरा भी जो बिल्कुल बच्चा ही था, चल बसा।

"सीरतुल्नबी-मौलाना शबली कृत"

डाक्टरों की राय है कि औरत ४० या ४५ वर्ष की उमर तक बच्चे पैदा कर सकती है मगर उस उम्र के बच्चे ज्यादा दिन तक जिन्दा रहने वाले नहीं होते। मतलब यह है कि अगर बच्चे पैदा करने के लिए शादी करनी हो तो औरत की यह उम्र इस मतलब के लायक नहीं और खदीजा की उम्र इस ऐतबार से शादी करने के

लायक न थी।

मौहम्मद अकेले में रहना अधिक पसन्द करते थे, ख्यालात की दुनिया में मस्त रहते थे, पहाड़ों में, जंगलों में, मैदानों में, रेगिस्तानों में, घर के कोने (एकान्त) में जा बैठते और खुद अपने दिल से बातें किया करते थे। यही पागलपन इनकी पैगम्बरी की बुनियाद (जड़) थी।

अगर रोटी रोजी की फिकर होती तो यह आजादी कहाँ मिलती ? और पैगम्बरी का दावा क्यों कर होता ? खदीजा की शादी ने ऐसी दैविक प्रेरणा मौहम्मद के साथ की कि ऐसा समय आ उपस्थित हुआ।

अरब में पाप होता था। निहायत खौफनाक पाप होता था और मौहम्मद का दिल नेकी के ख्यालात से भरा हुआ था, अरबी मूर्तिपूजक थे और मौहम्मद साहब ने खुले मैदान में खुले आकाश में, बड़े-बड़े जंगलों में किसी बड़ी भारी ताकत का अन्दाजा किया था। इसे यकीन हो गया था कि परमात्मा (खुदा) एक है और उसकी कोई सूरत शक्ल नहीं है।

खदीजा के गुलामों में एक जैद नाम का ईसाई गुलाम भी था उससे मौहम्मद की बातचीत हुआ करती थी और वह ईसाई धर्म के अनुसार मौहम्मद को विश्वास दिलाता था। मौहम्मद को जैद से अधिक स्नेह हो गया था और उसे खदीजा से अपने लिए मांग लिया, खदीजा के रिश्तेदारों में कुछ ऐसे लोग भी थे, जो ईसाई धर्म को मानते थे-उन्होंने मौहम्मद के दिली होंसलों को मिटाने में पूरी मदद की।

मौहम्मद को यकीन हो गया कि दुनिया के लोग गुमराह हो रहे हैं, उसे अपनी इस हालत पर रोना आता था उसके दिल में गहरा दर्द था, जो अरबी जुबान में बड़े ही दिलचस्प शैरों के रूप में कभी-कभी निकल रहा था, यही कुरान की पहली आयत है जो न मालूम किस कारण से कुरान के अन्त में लिखी गई है ? इसमें तड़फ है और तेजी है, सत्यता ही नहीं बल्कि बेकरार आरज़ू भी है और असलियत की खोज है।

मौहम्मद का हौसला बढ़ता गया और धीरज का कोई उपाय न देखकर आखिर उसे ख्याल हुआ कि आत्महत्या कर लेनी चाहिए, क्योंकि इस रोने धोने की जिन्दगी से क्या फायदा ? यहाँ पर खदीजा का बुढ़ापा बहुत कुछ काम आया और कोई नौजवान औरत होती तो उसको पागल समझती और उसका साथ छोड़ देती, आप डरती और दूसरे को भी डराती, खदीजा ने मौहम्मद को धैर्य बंधाया। मौहम्मद को शक था कि मुझ पर जिन्नों का जादू है। यह इल्हाम नहीं बल्कि शैतान की करतूत है, खदीजा ने जिन्नों की जांच की और मौहम्मद को विश्वास दिलाया कि यह फरिश्ते हैं, इनका पैगाम दुरूस्त है, और जब मौहम्मद ने कहा कि या तो वह दुनिया को बदल देगा या अपना ही खात्मा कर लेगा तब खदीजा ने दुनिया को बदलने वाले इरादे को पसन्द किया और खुद उस नये मजहब की जिसके प्रचार का मौहम्मद ने मन्सूबा बांधा था, वह उस मन्सूबे में दुनिया की सबसे पहली औरत मददगार (सहायक) बनी।

"कससुलम्बिया"

मौहम्मद को इल्हाम के वक्त बड़ी तकलीफ होती थी। उसके मुंह से झाग आने लगते थे, तमाम बदन से पसीना निकल पड़ता था, उसे बाहर की कोई भी सुध बुध न रहती थी, बहुत से लोगों का ख्याल था कि यह मिरगी के लक्षण थे, मौहम्मद उस समय मरीज हो जाते थे, तब खदीजा उसकी सेवा शुश्रुषा करती थी, उसके बदन पर कपड़ा डालती और मुंह पर पानी के छींटे देती, मतलब यह है कि उसे होश में लाती।

"बुखारी बाबा अलबही"

मौहम्मद की पैगम्बरी के पहले आसूँ खदीजा की गोद में बहाये गये। यह कहानी बहुत लम्बी है, किस्सा यों है कि मौहम्मद ने अपने आपको मौजूदा मजहब और इसके कानून से अलग कर लिया और अपने शागिर्दों (भक्तजनों) को भी पिछले मजहब से बागी बनने के लिए उपदेश देने लगा। इससे सबमें मौहम्मद के प्रति मुखालफत पैदा हो गई थी, और लोग मौहम्मद की जान के दुश्मन बन गये, अरब का दस्तूर था कि "खून का बदला खून" से लेते थे। किसी खानदान के एक आदमी को यदि किसी दूसरे खानदान का कोई आदमी कत्ल कर देता था तो इन खानदानों में हमेशा के लिए मुखालफत पैदा हो जाती थी, दोनों खानदान एक दूसरे की जान के दुश्मन बन जाते थे, मगर मौहम्मद के लिए एक बचाव का तरीका था। वह यह कि एक तो उसका चचा, उसकी हिमायत पर था दूसरी खदीजा थी, जिसका लिहाज सभी छोटे बड़े करते थे, मौहम्मद ने मुसीबत सही, दुख बरदाश्त किये,

लेकिन उस बीवी की बरकत से उसकी जान पर आँच न आई।

आखिर जब मौहम्मद पचास वर्ष का हुआ तो खदीजा का इन्तकाल (देहावसान) हो गया तथा चचा भी चल बसे। अब मौहम्मद अनाथ होकर रह गये, मक्का के लोगों के जोर-ओ-जुल्मों से तंग आकर लाचार मौहम्मद हिजरत* (देश त्याग) करके मदीने चले गये।

पाठक ! इससे अन्दाजा लगा लें कि खदीजा का वजूद मौहम्मद के लिए किस कदर भला था ? यही वजह थी कि इसकी मौत के बाद मौहम्मद के मकान में सिलसिलेवार बीवियाँ थीं और एक दूसरे से खूबसूरती में बढ़ चढ़ कर थीं। सभी प्रकार से आनन्द और आराम था। हुकूमत थी तथा सभी अख्तियार था, तो भी खदीजा की याद मौहम्मद के दिल से न भूलती थी। यहाँ तक की "आयशा" का अपनी जिन्दा सबूतों से भी वह लौ (लग्न) न थी जो मरहूमा-मगफूरा (रहम की बख्शी हुई) खदीजा के नाम से हो रही थी।

खदीजा ने मौहम्मद को बचाया, २५ वर्ष के जमाने में ! जब तक वह मौहम्मद की बीवी बनकर जिन्दा रही, मौहम्मद को कभी भी दूसरी शादी का ख्याल नहीं आया, आर्य शास्त्रों में खानेदारी (गृहस्थाश्रम) की मियाद (समय) २५ वर्ष मुकर्रर है। यह समय मौहम्मद ने बड़ी पवित्रता से निभाया, इसलिये इसे हम आर्य गृहस्थ कह सकते हैं।

---

*यहीं से हिजरी सम्वत् की शुरूआत हुई।

-"सम्पादक"

अगर मौहम्मद ने खदीजा से शादी न की होती, बल्कि उसका लड़का बनना मन्जूर कर लेता, तो यह रस्म आर्य धर्म शास्त्रों के मुताबिक होती। एक मुसलमान मौलाना साहब से बातचीत करते समय हमने यही कहा तो वह हैरान रह गये और आश्चर्य चकित होकर कहने लगे "हैं" ! मांये भी बनाई जा सकती हैं ? हमने कहा - हाँ हिन्दुस्तान में यह दस्तूर है कि किसी बुजुर्ग औरत को माई कहकर इस तरह पुत्रवत् फर्ज अदा करना। इसलिए हम उसे माई खदीजा ही कहेंगे। परन्तु वह अक्ल में, उमर में, तजुरबे में बीनिश (देखने) में अनुभवी कार्यों में है भी "माई खुदीजा" ही, इसमें कोई शक की गुंजाईश नहीं।

बेटी आयशा

खदीजा का इन्तकाल हुए अभी तीन महीने भी न बीते थे कि मौहम्मद ने महसूस (अनुभव) किया कि दुनिया में बीवी के समान प्यारी और कोई चीज नहीं है। मुसीबत बढ़ती ही जाती थी, घर में कोई ढांढस बंधाने वाला न था। बस दूसरी बीवी की तलाश करने लगे। माई सूदा, सुकरान की औरत थी। यह दोनों मियाँ बीवी मुसलमान हो चुके थे और इस जुर्म की इन्होंने सजा भी बड़ी कड़ी पाई थी। अरब निवासियों से तंग आकर उन्हें अपने देश को जिसका नाम "मालूफ" था, खेरबाद (अलविदा) कहना पड़ा था और विदेश में रहकर गुजर-बशर करते थे। जब मौहम्मद ने कुफ्फार (काफिर) से सुलह कर ली और उनकी मूर्तियों की

कीर्ति* को मान लिया (अगरचे) बाद में फिर उसे इस सुलह से परेशानी हुई और इसने पहले इलहाम को "शैतानी बही" कहकर मन्सूख (निरस्त) कर दिया । तो दूसरे देश निकाले हुए लोगों के साथ सुकरान और सूदा भी वापिस आ गये । यहां आकर सुकरान का इन्तकाल हो गया और सूदा बेवा हो गई, सूदा की वफादारी का सबूत इससे ज्यादा और क्या हो सकता था कि उसने देश निकाले की तकलीफों को इस्लाम के लिए बरदाश्त किया ? इधर अपने पति की वफादार ! उधर अपने मजहब पर जान देने वाली !! इस प्रकार की अच्छी बीवी मिलना मौहम्मद के लिए मुश्किल था ।

रहमत पैगम्बरी के कारण उससे अपनी शादी कर ली। बूढ़े की बेवा (विधवा) स्त्री से शादी कुछ बेजा न थी दोनों एक दूसरे के प्यारे सनेक का हक अदा कर सकते थे । खदीजा की जगह आखिर कौन ले सकता था? वह भी एक उम्मीद थी, जो पूरी हुई और घर सूना न रहा ।

हम ऊपर कह आये हैं कि गृहस्थाश्रम के नियमानुसार मौहम्मद २५ वर्ष तक एक ही बीवी के साथ रहे और वह भी दो पतियों की विधवा ! जो शादी के समय ४० वर्ष और मौत के समय ६५ वर्ष की थी, इस बुढ़िया से इस जवान की निभ गई, यह बात मौहम्मद की पवित्रता की साक्षी है । सिनफ नाजुक से प्यार

नोटः *इरशादातुल्सारी शरह सहीह बुखारी जिल्द, ७ मुअल्लि-मुल्तनजील । तफसीरूलजलालीन सफा ४५ जिल्द २, मुदाल्कुलतन्जील सफा २५६, तफसीर कबीर - तफसीर कलबी ।

मोहब्बत की फिदरत में था, यह दूसरे मर्दों को नेकी करने की नसीहत देता है, मुसीबत में मजबूर बना देता है, आफत में साविर (संतोष) को बढ़ाता है, सीने को उभारता है और रूह का "सकता" करता रहता है इस वक्त भी बहुत से लोग हैं जो औरत के हुस्न की रंगीन तस्वीर खींचते हैं, और पूजनीय देवी बना देते हैं, पवित्रता की मूर्तियाँ बनाकर तसव्वूर की फिजां में उड़ते हैं, यह आलम तखील का इश्क इनके दिल दिमाग पर इफत व असमत (पाकदामन) का राज बनाये रखता है।

मौहम्मद ने शायराना तबीयत पायी थी। मगर खदीजा के लिए ऐसा कहना कि - "शाली के बुढ़ापे ने आलम मौजूदा जवानी में औरत के शबाब की बहार का लुत्फ न उठाने दिया" यह कुव्वत तसव्वुर का एक और ताजयाना (सख्त) हुआ, दुनिया की औरतें दिमाग से उतर गई। बहिश्त की हूरों के ख्याल आने लगे। बाद में जब मौहम्मद की मतादिद (सिलसिलेवार) शादियाँ हो गई, तब उसका दिल कसरते अज्दवाज (व्यभिचार) से खट्टा हो गया, चुनाचे बाद के इलहाम में हूरों की खूबसूरती में वह मंजर जेब नजर नहीं हुए। जो खदीजा के हीन हयात (जीवनकाल) में रह रह कर कुरान की आयतों में जलवागर होते रहते थे, सूरत बखान में मजकूर होते हैं। अर्थात् व्यक्त की गई सूरतों में यह बातें मौजूद हैं।

इसी तरह क्वाँरी औरतें (लड़कियाँ) गोरी बड़ी आँख वाली हैं, उभरे हुए सीने और भरे कासे की। सचमुच औरत की खूबी क्वाँरेपन में है और मौहम्मद ने क्वांरी औरत से शादी की, वह

आयशा थी आयशा अबू बकर की लड़की थी, अबू बकर और मौहम्मद का अदायल उमर (बचपन का स्नेही) थी, उसकी उमर और मौहम्मद की उमर लगभग एक सी थी । सिर्फ दो साल का फर्क था, मौहम्मद अबू बकर से दो साल बड़ा था । अबू बकर बहुत जल्दी बिना किसी हीला हवाला (बहाने) के मौहम्मद पर ईमान लाया था और आयशा उसकी दिलबन्द (लड़की) थी । आयशा की उमर उस समय सिर्फ छः साल की थी ।

"मुआरजुलनब्बत सफा् २८ रकूब ४"

मौहम्मद ने इस कम उमर की लड़की पर जो उमर में इसकी पोती के बराबर थी, अपनी निस्बत क्यों ठहराई ? कितने ही लोगों का ख्याल है कि अबू बकर को रिश्तेदार बनाना था । प्रथम तो यह कि जब अबू बकर मौहम्मद के दीन पर ईमान ले आया और उसे खुदा का रसूल मान लिया, अर्थात् उसकी आज्ञा को खुदा की आज्ञा मान लिया तो इस प्रकार और निजी ताल्लुक की जरूरत ही न रही थी लेकिन मान लो अगर यह ईमान का रिश्ता कमजोर दिखाई पड़ता था तो उसकी मजबूती का सबसे अच्छा ढंग यह होता कि मौहम्मद अबू बकर की लड़की को अपनी लड़की मान लेता और उसकी शादी अपने हाथ से करता, उसका जहेद (दहेज) देता और उसका बाप बन जाता । लेकिन अरब निवासी इस मसनुई तथा हकीकी रिश्तों से ज्यादा पायदार और खुशायन्दा रिश्तेदारियों के इमकान से, आशना (जानकार) न थे ।

"सैय्यद अमीर अली" लिखते हैं कि- अरब में कोई औरत

बीवी के सिवाय किसी और रिश्ते से किसी मर्द के साथ न रह सकती थी । मौहम्मद अपनी सियासी जरूरियात से मजबूर था, कि लगातार शादियाँ करे । आह ! प्यारे भारत !! पवित्रता के तारे भारत !!! प्राचीन आर्यों की प्राचीन सभ्यता के भारत !!!! दुर्गादास, औरंगजेब की पोती सफीयुन्निसा को अपनी लड़की बताता है, तथा शिवाजी, गोलेवादी की असीर शहजादी को जो गनीमत (लूट) के माल के साथ उसके साथ थी, अपनी बेटी समझते हैं, यह है इस प्यारे भारत की विशेषता ।

परन्तु जरा इधर भी ध्यान दीजिये एक बार का वाकया है कि युद्ध के दौरान सफर में आयशा गायब हो गयी, क्योंकि आयशा नाजुक और हल्के बदन की थी, इसलिए पालकी उठाने में बोझ के अन्दाज से कोई पता ही न चला कि पालकी के अन्दर आयशा है या नहीं ? आयशा अब लाचार हो वहीं बैठी रही कि अब कोई लेने आते हैं, अब कोई लेने आते हैं । आखिर इसी इन्तजार में सवेरा हो गया और कोई भी न आया । संयोग से अबू सफियान अपना ऊँट लिये उधर आ निकला, आते ही उसने आयशा को पहचान लिया और बिना कुछ बातचीत किये आयशा के सामने ऊँट बैठा दिया, और आयशा भी उस पर उचक (उछल) कर सवार हो गई, अन्ततः एक रात एकान्त में गुजारने के बाद फिर अपने प्यारे मौहम्मद से जा मिली ।

भला इस हालत में कौन किसकी जुबान पकड़ता ? नतीजा यह हुआ कि तरह-तरह के गन्दे आक्षेप लोग आयशा पर लगाने लगे, धीरे-धीरे मौहम्मद भी आयशा से नाराज हो उठे । इस हालत

में बेचारी आयशा और कोई उपाय न देखकर नैहर अर्थात् अपने माँ-बाप के घर चली गई, आयशा की माँ उसका दिल बहलाती रहती, मगर आयशा के दिल से गम की गाँठ दूर न होती और न ही खुलती।

इस परिवर्तन के कारण मौहम्मद के दोस्तों और दुश्मनों में तरह-तरह के मतभेद पैदा हो गये। मौहम्मद के नाम पर दाग लग गया, उसके रौब में भी फर्क आ गया, अन्त में अली और उस्मान से राय ली। अली ने कहा कि आयशा की दासी से इस घटना की सफाई ली जावे, सलाह नेक थी, मगर अली के लिए यह राय बड़ी बुरी साबित हुई। आयशा इस गुस्ताखी को मरते दम तक न भूली कि अली ने जो खुद मौहम्मद का दामाद है, इसकी इज्जत पर शक किया, अब अली की आयशा से विकट दुश्मनी हो गई। मौहम्मद की बेटी फातिमा, माई खदीजा की प्यारी यादगार फातिमा, जो अली से ब्याही हुई थी, इधर फातिमा का पति उधर अपना दामाद "अली" है उधर चहेती बीवी आयशा है ! लाचार मौहम्मद बेचारा अब जाये तो किधर जाये और क्या करे ? आखिरकार घर में घरेलू लड़ाई की जड़ जम ही गई। इस घरेलू लड़ाई ने मौहम्मद की मौत के बाद इस्लाम की तवारीख को लगातार खून खराबी की तवारीख (इतिहास) बना दिया। खलीफा के लिए इस कदर खून खराबी न होती, अगर अली और आयशा का दिल साफ होता और अली से आयशा की ऐसी भयँकर दुश्मनी न होती।

(विस्तार से देखें-हजरत की बीवियों का कच्चा चिट्ठा)

बहुत बीवियाँ करने वालों देखो जब पैगम्बरों की जिन्दगी भी खतरे में है, अगर इस अजमत (बड़प्पन) के लोग भी अपनी गलतियों से तथा इन बुरे कामों से नहीं बच सके, तो तुम कौन हो? अपनी करतूत के कड़वे फलों से अपने आपको सुरक्षित समझते हो ? दशरथ का घर बरबाद हो गया, मौहम्मद का दीन खाक में मिल गया, क्यों ? इसलिये कि बूढ़े होकर नवयुवतियों (कुमारियों) से शादियाँ की।

मौहम्मद आयशा के कमरे में गया और उसके माँ-बाप के मामने सारी गुजरी हुई कहानी को सचमुच सुना देने की अर्ज की, तब मौहम्मद के सामने ही आयशा को उसके माँ-बाप ने कहा कि -

"अगर तूने गुनाह किया है तो तू तौबा कर, अल्लाह बख्शने वाला है, रहम करने वाला है और अगर तू बेगुनाह है तो तू अपनी बेगुनाही का इजहार कर"।

आयशा थोड़ी देर तक चुप रही और अन्त में बोली-

"सब्र ही मेरा जवाब है, खुदा मेरा मददगार है, मैं अगर अपने आपको बेगुनाह कहूँ तो कोई मानेगा नहीं, तौबा करूँ भी तो किस कसूर से ? खुदा जानता है कि मैं "बेगुनाह हूँ"।

मौहम्मद अपने दिल से आयशा का चाल चलन जानता था और उसका कायल था, लेकिन लोगों को भी तो कायल करना था। आखिर को अपने आपको इल्हाम की सूरत में डाला और अपना मुँह कपड़े से ढक लिया तथा वह कुछ देर जाहिरा बेहोश

पड़ा रहा, आखिर थोड़े से समय बाद अपने माथे से पसीना पोंछता हुआ उठा और कहा -

"आयशा ! खुशी मना !! अल्लाह ने तेरी बेगुनाही की साक्षी दी है"।

आयशा का खोया हुआ सौभाग्य फिर से मिल गया। लेकिन आक्षेप लगाने वालों पर शामत आ गयी, इल्हाम पर इल्हाम होने लगे, आक्षेप लगाने वालों पर तरह-तरह की बौछारें पड़ने लगीं आखिर उनके लिए सजा मुकर्रर हुई, कि उन्हें ८०-८० कोड़े लगाये जायें। मरदों के साथ-साथ एक औरत पर भी यह कोड़े बरसाये गये।

"सूरह अन-नूर-४ (कुरान)" में रसूल और रसूल के खुदा का गम व क्रोध अब तक लिखा चला आता है, देखिये-

वल्लज़ी-न यर्मूनल् मुह-सनाति सुम्-म लम्---उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिकून ॥

(कुरान मजीद सुरः नूर आयत ४)

अर्थात् और जो लोग परहेजगार औरतों को बदकारी का ऐब लगायें और उस पर चार गवाह न लायें तो उनको अस्सी दुर्रे (कोड़े) मारो और कभी भी उनकी गवाही कुबूल न करो, और यही बदकिरदार हैं।

इलहाम के नाम पर भाइयों ! आलम ये हुआ कि बदज़ुबान लोगों की ज़ुबानें उनके मुंह में घुसेड़ दी गयीं, अब जरूरत इस बात की हुई, कि हरम की फरमाइश की जावे, क्योंकि ताली दो हाथों से बजती है। वह खिदमत भी अल्लामियाँ ने कबूल की और तब

खुदा की ओर से "सूरा-अहज़ाब आयत ३२-३३ उतरी" कि -

यानिसा-अन्न बिय्यि लस्तुन्-न-क-अ-हदिम्-----------
----- कौलम्-मअ्-रूफ़ा "३२" व कर्-न फ़ी-------
-----तत्-हीरा "३३"

(कुरान मजीद सुरः अहजाब आयत ३२-३३)

अर्थात् ऐ पैगम्बर की बीवियों ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परमात्मा से डरती हो तो अपने कौल (कथन) से न फिरो ताकि वह लालच न करे, जिसके दिल में मरज है, और कहा गया है, कौल और मारूफ अपने-अपने घरों में रूकी रहो और न दिखाती फिरो ओरों को श्रंगार जैसे जहालत के जमानें की औरतें करती थीं।

आखिर मौहम्मद को अपनी बीवियों को आप ताकीद करना, तथा तम्बीह देना बाकी जौजियात व लवाजमात के खिलाफ था। अल्लामियाँ स्त्री पुरूष दोनों का बुजुर्ग है। उसको बीच में डाला और जो चाहा वह उससे इल्हाम के रूप में कहलवाया। इस तरह आयशा और मौहम्मद में पुनः एकता अर्थात् प्यार-मौहब्बत हो गई, और आयशा का पहले की तरह घर भर में राज्य हो गया, परन्तु भाइयों ध्यान रहे इसके बाद फिर कभी भी किसी भी युद्ध में आयशा साथ न ले जाई गई, आखिर क्यों? बात साफ जाहिर है कि एक बार के ले जाने पर तो यहां तक नौबत पहुंची, आगे ले जाने पर क्या होता ? ये तो अल्लाहताला और उसके प्यारे नबी को ही ज्यादा मालूम है।

इसके बाद आयशा के दर्शन आखिरी दर्शन हैं । जो इसके पति की मृत्यु शैय्या पर हुये हैं । मौहम्मद ने अपने आखिरी मर्ज में जो मरजुल्मौत (मौत की बीमारी) साबित हुई, अपनी बीवियों से मंजूर करा लिया था कि अब मैं आयशा ही के घर में रहा करूँगा और इसी मकान में अक्सर आयतें उतरा करती थीं, वही खटिया थी, वही बिस्तर था, वहीं लिहाफ था । यह मकान मौहम्मद को सब मकानों से ज्यादा प्यारा था ।

बीमारी के समय में मौहम्मद कब्रिस्तान को गया और अपने मरने का यकीन करके घर लौटा । आयशा भी इत्तिफाक से सिरदर्द से दुखित थी, वह कराह-कराह कर कह रही थी, मेरा सर ! मेरा सर !! यह सुनकर मौहम्मद एकदम बोल उठे. हे आयशा ! यह शब्द तो मुझे कहने चाहिए थे । आयशा सुनते ही चुप हो गई । मौहम्मद को जराफत (मजाक) सूझी और कहा ! आयशा क्या तुम यह पसन्द न करोगी की तुम्हारी मौत मेरे जीते जी हो, जिससे मैं तुम्हें अपने हाथों से दफन करूँ और तुम्हारी कब्र पर दुआ पढ़ूँ ? आयशा ने नाक भौं चढ़ा ली और जवाब दिया कि यह किसी और को सुनाओ, मैं समझ गई, मेरे घर को मुझसे खाली कराने और किसी (मुझसे भी) खूबसूरत पुतली (सुन्दर स्त्री) को ला बसाने की आरजू आपके मन में है । मौहम्मद को जवाब के लिए फुरसत कहाँ थी ? न ही इतनी ताकत थी कि आयशा के सामने जवाब दे सके आखिर मन्द हंसी (मुस्कुराहट) में ही बात को टाल दिया ।

"हयात-ए-मुहम्मदी-म्योरसाहब कृत"

पाठक समझ गये होंगे कि एक नवयुवती बीबी को अपने

पीछे छोड़ने का ख्याल मौहम्मद के लिए किस कदर परेशानी का कारण था ? पर हाय ! यह गिला मंजर !! हसरत नाक मंजर !!! इबरत नाक मंजर !!!! मस्जिद का आँगन है। बीस साल की जोरू जो बासठ साल के शौहर का सिर अपने घुटनों पर लिए हुए बैठी है। मौहम्मद उसका चबाया* हुआ दातुन मुंह में लेते हैं और इस क्षणिक शरीर से बाहर हो जाते हैं। उसके बाद आयशा को उसका बाप अबू बकर कहता है कि २० साल की विधवा आयशा मुझे तुझ पर रहम आता है, तेरी जवानी पर रहम आता है, तेरी उमंगों पर, तेरी हसरतों पर, तेरे हुस्न पर तथा तेरी सूरत पर रहम आता है, मेरी आँखों में वह आँसू हैं जो किसी बाप की आंखों से अपनी लड़की को विधवा होता हुआ देख करके बेअख्तियार निकल पड़ें। मगर करूँ क्या ? मैं तुझे अपनी लड़की कहकर, बिलखता, सिसकता और रोता हूँ, जबकि मौहम्मद के लिए मेरा मन कुछ नहीं कहता।

सदा सुहागिनें

अबू बकर हज़रत मौहम्मद साहब का दायाँ हाथ था, तो मौहम्मद उमर बायाँ। वह इतनी आसानी से मुसलमान न हुआ था जैसे अबू बकर ! मगर जब हुआ तो पूरे विश्वास के साथ हुआ। अब वह अपने मजहब के लिए बराबर हर वक्त लड़ने मरने को तैयार रहता था।

*तवारीख जैबुल्लाह पेज १६६ मदारिजुल्फतूहा रकूब ४, बाब १२ आदि।

अबू बकर गजब का दिलेर था, अकलमन्द था, इसके बरखिलाफ (विरूद्ध) मौहम्मद उमर जोशीला था, वह बहुत जल्दी गुस्से में आ जाता था, उस समय उसे अपने काबू में कर लेना सहज न था। यही मिजाज मौहम्मद ''उमर'' से उसकी लड़की ''हफसा'' ने पाया था। वह भी जब गुस्से में होती थी तो किसी के रोके न रूकती थी, इसकी शादी ''खनीस'' से हुई थी, जो बदर की लड़ाई में मारा गया, ६-७ महीने तक वह विधवा रही और कोई भी मुसलमान उससे शादी करने के लिए तैयार न था, इस पर उमर ने पहले अबू बकर से निकाह करने को कहा परन्तु उसके इन्कार करने पर फिर उस्मान से निकाह के लिए दरख्वास्त की, परन्तु इन दोनों ने इन्कार कर दिया क्योंकि ''हफसा'' का सँभालना कोई मजाक या खेल न था, इस पर उमर बहुत बिगड़ा और अन्त में मौहम्मद के पास हफसा के निकाह का प्रस्ताव लेकर आया मौहम्मद ने अपनी मेहरबानी से उसे अपनी बीवी बनाना मंजूर कर लिया। इस तरह जो रिश्ता मौहम्मद का अबू बकर से था वही उमर से भी हो गया। दोनों बराबर वफादारी से इस्लाम का प्रचार करने लगे और अपनी लड़कियों की तोफैल मौहम्मद के मातहत बन गये।

ऐसे ही बदर की लड़ाई के एक और शहीद अबीदा की बीबी जैनब थी, अबीदा रिश्ते में मौहम्मद का भाई था उसकी बेवा औरत से भी मौहम्मद ने शादी कर ली। जैनब ने बड़ी सखी (दिलावर) तबीयत पायी थी, इससे इसका नाम ''उम्मुलमसाकीन'' पड़ गया।

अब अल्लमा इब्तिदाई (आरम्भिक) मुसलमानों में था। वह "हबश" की हिजरत में अरब से निकाल दिया गया था । जब मौहम्मद ने मक्का से भाग कर मदीना में डेरा डाल दिया तो वह वापिस आ गया, "उहद" की लड़ाई में वह घायल हो गया था । मगर बाद में अच्छा हो गया, जब "बनिसाद" पर इस्लाम ने चढ़ाई की तो यह उसका सेनापति बनाया गया था, वहाँ वह पिछले घावों की कमजोरी के कारण फिर बीमार पड़ गया और उसकी मौत हो गयी ।

मौहम्मद को अपने रिश्तेदारों से सहानुभूति थी वह उसकी विधवा औरत "हिन्द" के पास जाया करता था, हिन्द थी तो बूढ़ी मगर कमाल की खूबसूरत थी । मौहम्मद ने उससे शादी करने का इरादा जाहिर किया, उसने बुढ़ापे का बहाना किया, तब पैगम्बर ने फरमाया मैं भी तो बूढ़ा हूँ । बुढ़िया ने कहा कि बाल बच्चे हैं, मौहम्मद उनका भी वारिस बना और बुढ़िया को अपने घर ले आया । मदीना-ए-मस्जिद के साथ इस समय तक ५ कोठरियाँ पहले ही बन चुकी थीं, उनमें से हर एक में मौहम्मद की एक एक बीवी रहती थी । मौहम्मद बारी बारी एक एक रात, एक एक दिन, एक एक बीवी के पास गुजारता था । आखिरी कोठरी हारिश की थी, जब मौहम्मद के घर कोई नई बीवी आती थी, तो उसे हारिश की कोठरी में ठहराया जाता था और हारिश के लिए दूसरी नई कोठरी तैयार करायी जाती थी, वह बेचारा चुपके से अल्हदा रहने का इन्तजाम कर लेता था । एक दफा मौहम्मद को खुद शर्म आयी और कहने लगा कि आखिर हारिश भी क्या

कहता होगा ?

रा० आ० सैयद अमीर अली फरमाते हैं कि यह सब विधवायें जिन्हें मौहम्मद की बीवी होने का घमण्ड हुआ, ये सभी बेबस थीं, जिनके खाविन्द (पति) इस्लाम की सेवा करते-करते शहीद हो गये थे । मौहम्मद का यह फर्ज था कि उनके गुजारे का इन्तजाम करता, वह उसका कार्य जरूरी था परन्तु उसका अपना गुजारा पहले ही तंगी से चलता था, उस पर उसने अपनी रोजी पर और भी बोझ ले लिया तथा अपने खर्चे की जिम्मेदारी और भी बढ़ा ली, और आमदनी की सूरत वही रही । भाइयों ! मुल्क-मुल्क का रिवाज है । मुमकिन है सैयद अमीर अली का कयास (कथन) सही हो ।

अरब में रसालते मौहम्मद के जमाने में कोई औरत किसी मर्द के पास सिर्फ जोरू बनकर ही रह सकती हो । वरना हिन्दुस्तान की रसम तो यह है कि ऐसे धर्मात्मा लोग परायी औरतों को धर्म की बहिन बना लेते हैं, जिससे उनका गुजारा भी चल जाता है और दीन भी बरबाद नहीं होता, मुमकिन है सारे मुसलमानों में कोई और विधवाओं का पालन कर्ता न हो सकता हो, कोई कुवांरा या रंडुवा उनको अपनी स्त्री के रूप में ले जा सकता हो और यह मेहरबानी का मौड़ (सेहरा) सिर्फ मौहम्मद के सिर बंधा हो, हमारी तुच्छ बुद्धि में अगर मौहम्मद उन्हें बहन बना लेता तो भी काम चल जाता और अगर शादी जरूरी थी तो किसी कंवारे से उसका निकाह करा देता, पर भाइयों अपना अपना मजहब है । हो सकता है कि मौहम्मद को यही तरीका पसन्द आया हो कि

बीवियों से अपना घर भर ले, ६० वर्ष का बूढ़ा और उस पर ५-५ बीवियां ! वाह ! वाह !! खैर कुछ भी हो ? कोई जलता है तो जलता रहे, हज़रत के घर में उसकी बीवियों से चहल पहल तो रहती ही होगी, मौज से रात-दिन कटते होंगे, सिनफ् नाजुक के साथ बूढ़े का ताल्लुक दुरूस्त है ।

बहुरिया

हम ऊपर कह चुके हैं कि जैद नाम का एक लड़का खदीजा का ईसाई गुलाम था उसने मौहम्मद की मजहबी और दिली मुश्किलें दूर की थीं इसलिए मौहम्मद को उससे खास प्यार था, चूंकि खदीजा ने वह गुलाम उसे ही दे डाला था और मौहम्मद ने उसे अपना मुतबन्ना या लयपालक (गोद लिया हुआ लड़का) बना लिया था । जैद भी मौहम्मद से अधिक प्रेम करता था, एक बार जबकि उसका बाप उसे लेने आया तो उसने जाने से साफ इन्कार कर दिया क्योंकि मौहम्मद रसूल भी और बाप भी (दोनों) थे, इसलिए वह वहां अकेले वालिद (बाप) के पास जाकर क्या करता ? उसकी पहली शादी "उम्ऐमन" से हुई थी। जिसकी उमर जैद से भी दुगनी थी, लेकिन उसे खुद पसन्द करने वाले बाप (मौहम्मद) के हुक्म से लाचार होकर निकाह करना पड़ा । इस औरत से एक लड़का हुआ, जिसका नाम "उसामा" था, जैद की दूसरी शादी "जैनब" से हुई, जैनब कुरैशी खानदान से थी और मौहम्मद की फुफेरी जाति बहन थी । एक दिन मौहम्मद जैद के न होने पर उसके घर जा पहुंचा । टाट के परदे की आड़ में जैनब

चुपचाप अर्धनग्न रूप में बैठी थीं उसने रसूल (जो उसका ससुर भी लगता था) की आवाज सुनी तो जल्दी से उन्हें भीतर लाने का प्रबन्ध करने लगी मौहम्मद की निगाह उसके खूबसूरत बदन पर पड़ी, बस फिर क्या था? दिल पर एक दम बिजली सी गिर पड़ी और मुँह से निकला आह ! सुभानल्ला !! या खुदा तू भी कैसी-२ खूबसूरती की कारीगरी करने वाला है ? जो अच्छे-अच्छों के दिलों को बदल देती है, जैनब ने यह शब्द सुन लिए और दिल ही दिल में मौहम्मद के दिल पर कब्जा पा जाने की खुशी मनाने लगी। जैद से शायद उसकी न बनती थी । वह लाख मौहम्मद का वारिस हो, भई आखिर था तो गुलाम ही ।

जब जैद घर पर आया तो उससे जैनब ने इस माजरे का जिक्र किया । बस ! फिर क्या था इसे आप मौहम्मद की शादी की बातचीत (अकीदत) समझिये या शायद उसका दिल जैनब से पहले ही खट्टा हो गया हो, अतः वह दौड़ा-दौड़ा मौहम्मद के पास गया और अपनी बीवी को जिस पर मौहम्मद का दिल आ चुका था । तलाक देने पर राजी हो गया, मौहम्मद ने रोक कर यह कहा, आपस में खुशी से गुजर करो, लेकिन जैद ऐसी बीवी का पति बनकर नहीं रहना चाहता था, जो दूसरे को दिल दे चुकी हो, आखिर उसने जैनब को तलाक दे ही दिया, और जैनब मौहम्मद के पीछे पड़ी कि मुझे भी अपनी खिदमत में ले लीजिये । मौहम्मद ने सोचा इस पेशोपेश से नाहक बदनामी होगी, आखिर वही पुराना हथियार काम आया, और "वही" (इल्हाम) ने सब काम तय कर दिया और अल्लाह ताला क़ी ओर से इलहाम की सूरत में

सूरह अहजाब में आयत नं. ४ उतरी कि -

"खुदा ने इन्सान को दो दिल नहीं दिये, न तुम्हारी गोद के लिए बेटे अपने बनवाये हैं। जो तुम कहते हो, यह तुम्हारे मुंह से निकला है। मगर अल्लाह असली बात जानता है, वह रास्ता ठीक दिखाता है तुम्हारे वारिसों को चाहिये कि वह अपने बाप के नाम से मशहूर हों और जब तूने एक ऐसे बन्दे से जिस पर अल्लाह का भी फजल है, तेरा भी फजल है, कहा कि तू अपनी बीवी अपने पास रख और अल्लाह का खौफ कर और तूने अपनी छाती में छुपाया जो अल्लाह कि मर्जी थी कि जाहिर हो और तू इन्सान से डर, हालांकि अल्लाह ज्यादा काबिल है, डरो मत, जब जैद ने तलाक की रसम पूरी कर दी तो हमने उससे (मौहम्मद से) ब्याह दिया, ताकि मोंमिनों को इसके बाद अपने मुतबन्नों (गोद लिये हुए लड़कों) की बीवियों से शादी करना जुल्म न हो बशर्ते कि तलाक की रसम पूरी हो चुकी हो और अल्लाह का हुक्म जरूर पूरा होगा "।

"सूरा-ए-अहजाब आयत ४"

मौहम्मद तुममें से किसी का बाप नहीं है। वह अल्लाह का रसूल है और "खातिमुलमरसलीम" है और अल्लाह सब कुछ जानता है।

यह शब्द हमने कुरान से लेकर इसलिये लिखे हैं ताकि मौहम्मद के दिल का पता (जानकारी) पाठक लगा सकें, जैनब की जियारत के बाद मौहम्मद ने झूठ-मूठ ताअम्मुल जाहिर किया

वरना दिल में इश्क की आग भड़क गयी थी तथा जो हर समय भड़क रही थी "वही" (इल्हाम) होता गया और मौहम्मद ने उसके बाद जैनब के पास पैगाम भेजा कि -

"अल्लाह ने तुझे मुझसे मिला दिया है । इसलिए अब निकाह की कोई जरूरत नहीं है" ।

जहां अल्लाह दो दिलों को मिला दे, वहाँ निकाह पढ़ने वाले मौलवियों और काज़ियों का बीच में पड़ना मजाक नहीं तो और क्या है ? सब लोगों को खुश करना जरूरी था इसलिए इलहाम के नाम पर कह दिया कि -

"अल्लाह ने सातवें आसमान पर निकाह पढ़ा है और जिब्राइल फरिश्ता उसका गवाह है* ।

अब भाइयों ! इन दो शर्तों के अलावा निकाह के लिए और बाकी शर्त ही क्या बची है" ? "रंगीले रसूल" का यह रंग अर्थात जलवा भी अजीब है, भाइयों दुनिया में बेटा ! बेटा न रहा और बहू-बहू न रही ।

अब पाठक समझ सकते हैं कि क्यों मौहम्मद को किसी औरत को माँ या बेटी बनाने में झिझक थी ? जब गोद लिए हुए लड़के मुतबन्ने के साथ वह सलूक नहीं हो सकता जो हकीकी (पैदायशी) औलाद के साथ होता है और उनकी बीवियाँ तक मौहम्मद के लिए हलाल हो सकती हैं, तो धर्म की बेटियां, बहिनें भला क्यों कर बच सकती हैं ? उस वक्त के मुसलमान तो खामोश नहीं हैं और तवारीख (इतिहास) का फतवा यही है कि

---

* तफसील हुसेनी आयत मजकुर सूरा जमकुर,

मौहम्मद ने बेजा किया। उसकी "वही" (इलहाम) बेजा ! पैगम्बर मुल्जिम !! उसका इल्हाम मुल्जिम !!! अल्लाहमियाँ और उसका फरिश्ता जिब्राइल भी मुल्जिम !!!

ऐसा नहीं है कि मौहम्मद अपने गुनाह न जानता था । बल्कि वह जानता था कि अगर उसकी बेहूदगीयाना नजर जैनब पर न पड़ती या जैनब ने ही अपने बदन को पूरी तरह छिपा लिया होता तो दिन-दहाड़े यह अन्धेर न होता जो हुआ अतः अब तो जो हो गया, सो हो गया अब आगे देखो -

पहले तो इसे (मौहम्मद को) अपने ही हरम का ख्याल आया । लोग आजादी से उसके घर आते जाते थे । उसकी बीवियों से बातचीत होती थी सम्भव है किसी समय पर यही मामला किसी मुसलमान के ऊपर गुजर जाये, जैसा कि पैगम्बर पर बीत चुका है, और मुमकिन है कि मौहम्मद की कोई बीवी ऐसी ही होनहार निकल पड़े जैसा कि जैद की बीवी साबित हो चुकी है । इसलिए इसका प्रबन्ध भी आगे के लिए हो जाना चाहिए । ऐसा सोच कर हजरत ने दूरन्देशी के दर्पण में झांका और "वही" (इल्हामी शक्ति) की जंजीर हिलाई और काम पूरा किया ! तभी सूरह उतारी गई देखिए -

या अय्युहल्लजी-न आमनू ला----------------------

का-नअिन्दल्लाहि अज़ीमा ॥५३॥

(कुरान मजीद सुरा अह्ज़ाब आयत ५३)

"ऐ मोमिनों !! रसूल के मकान में न जाओ, जब तुम्हें कुछ पूछना हो तो परदे की आड़ से पूछ लो यह तुम्हारे और

उनके दिलों के लिए बेहतर होगा । यह मुनासिब नहीं कि तुम रसूल के दिल को दुखाओ और न यह कि उनके बाद कभी भी उनकी बीवियों से शादी करो, रसूल की बीवियाँ सभी मौमिनों की मायें (मातायें) हैं'' ।

इस इल्हाम का आखिरी जुमला (वाक्य) मुझे बहुत भाया, मैं खुद उन्हें अपनी माता कहता हूं । आगे चलकर फिर कहते हैं -

या अय्युहन्नबिय्यु कुल्----कान्नल्ला-हु गफूर्रहीमा ॥५९॥

(कुरान मजीद सुरा अह्ज़ाब आयत ५९)

अर्थात ऐ रसूल ! अपनी बीवियों और लड़कियों तथा मोमिनों की बीवियों से कह दे, कि वह अपने ऊपर दामन का एक हिस्सा डाल लिया करें । फिर अपनी आँखों पर काबू रक्खें और अपनी हया की हिफाजत करें तथा अपनी छाती पर परदा रक्खें और अपनी-अपनी लज्जा की हिफाजत करें । और कवायद (कानून) बनावें कि पड़ोसिनों के घर में किसी तरह दाखिल न हों जिससे उनके काम में बाधा न पड़े ।

भाइयों ! अगर यह कायदे कानून जैनब के घर जाने से पहले बनाये जाते तो जैनब का घर बर्बाद होने से बच जाता और मौहम्मद के नाम पर दाग भी न आता । मगर क्या परदे ने मोमिनों को उनकी करतूत से बचा लिया ? बुरे काम के चाल चलन की सच्ची दवा दिल का साफ होना है टाट का परदा नहीं । अगर मौहम्मद इस पर ज्यादा जोर देते तो शायद अपने दीन और दीन के मानने वालों को ज्यादा बेकसूर छोड़ जाते ।

म्योर साहब ने अपनी पुस्तक ''हयात-ए-मुहम्मदी'' में एक बेगम साहिबा भोपाल का एक जिक्र किया है जो हज्ज के लिए मक्का गयी थी जो अरब के व्यवहार का आखों देखा हाल कुछ इस प्रकार बयान करती है, और वहां का नक्शा इस प्रकार खींचती है-

औरतें अक्सर १०-१० शादियाँ कर लेती हैं । जिन्होंने दो-दो खाविन्द किये हैं उनकी तादाद बहुत कम है जो अपने पति को बूढ़ा होते देखती हैं या दूसरे से उसकी आँख लड़ जाती है तो वह मक्के शरीफ की सेवा में हाजिर होती है और मामला-फैसला करार अपने पहले पति को छोड़ देती है और किसी दूसरे से जो जवान तथा खूबसूरत हो उसके साथ प्रेम पैदा कर लेती है । भाइयों यह है परदे की बरकत और उसका जाहो जलाल तथा उसका कमाल !

हरम का सिंगार

मौजूदा जिल्द का मजमून रसूल का दस्तूर खानदानी (गृहस्थ विषय) है इसलिए हमने किसी दूसरे मज़मून को इसमें दाखिल नहीं होने दिया, मगर इसमें ईर्ष्या-द्वेष की बू आयेगी । क्योंकि अब जिन असमतमआब को मुहम्मदी सिर्फ जौजियत अदा करने लगे हैं, वह केवल यहूदिन है। मौहम्मद के इसरार (हठ) के बावजूद इसने अज्दवाज (व्यभिचार) से इन्कार किया । पाठकों के लिए इसका कारण समझना कठिन है । अगर उन्हें मौहम्मद और अहले

यहूदियों के आपस में मेल जोल का थोड़ा सा हाल सुना दिया जाये तो अच्छा होगा, देखिये -

मक्के से हिजरत (भागने) के बाद मौहम्मद को यहूदियों से तरह-तरह की आशायें थी । उसने उनसे दोस्ती का रिश्ता गांठा, उनके मजहब की तारीफ की और अपने मजहब की हक्कानियत का सर्टीफिकेट भी उन्हीं से लिया और बाद में जब उसके मददगारों की संख्या बढ़ गयी तो वही यहूदी मौहम्मद की बुराई का कारण बने जो कांटे की तरह दिल में खटकने लगे एक दिन आया जब उनका मुसहारा (घेराव) हो जाना सफल हुआ तब उन्होंने माफी मांगी तो फैसला हुआ कि उन्हें कत्ल कर दिया जाये । सैंकड़ों यहूदी जरा सी देर में तलवार के घाट उतार दिये गये । जिनमें एक औरत को भी उनके फैसले पर कत्ल कर दिया गया ।

मेहरबानी का सलूक एक खूबसूरत औरत के साथ हुआ । जिसका नाम "रेहाना" था, उसे पहले से ही सबके बीच से हटा दिया गया था, क्योंकि वह सुन्दरता में बढ़ी-चढ़ी थी, जो मौहम्मद के लिये रिजर्व थी । मौहम्मद ने उससे शादी की दरख्वास्त की मगर उसने नामन्जूर कर दिया । उससे कहा गया कि वह इस्लाम कबूल कर ले, परन्तु वह इस पर भी राजी न हुई । आखिर मौहम्मद ने उसे लौंडी (रखैल) बना लिया और इसी हालत में वह कुछ दिन तक जीती रही मगर बहुत साल नहीं, आखिरकार वह अपनी कौम और अपनी खोई हुई आबरू के गम में घुल-घुल कर मर गयी ।

बनीमुस्तलक पर युद्ध करने का जिक्र हम आयशा के पीछे

रह जाने और तोहमतों (आक्षेपों) का निशाना बनने के समय कर चुके हैं । इस मुहीम में और मालोअस्बाब के साथ ''जोएरिया'' नामक एक यहूदिन और आयी थी, उसकी कीमत उसके जीतने वालों ने मौहम्मद के व्यक्तियों से ज्यादा लगायी तब मुहम्मद के पास हुक्म भेजा गया, मौहम्मद ने कीमत बढ़ाने के बजाय पहली कीमत देकर ही उसे अपनी बीवी बना लिया ज्यों ही ''जोएरिया'' मौहम्मद के कमरे में गई त्यों ही आयशा ने उसकी सुन्दरता देखकर ताड़ लिया कि यह औरत अब वापिस न जायेगी । यह खटका पैदा हुआ हो या न हुआ हो परन्तु वह समझ गयी थी कि एक सौतन और बढ़ने को है और यही हुआ भी !

खैबर भी यहूदियों की एक बस्ती थी । जिस पर मौहम्मद ने चढ़ाई की और उसे फतह कर लिया जिसमें उनका सरदार ''कनान'' मारा गया, बस ! उसकी बीवी जो खूबसूरती में बहुत ही बढ़-चढ़ कर थी, वह मौहम्मद के हत्थे चढ़ गई, मौहम्मद ने उससे भी निकाह का इरादा किया, वह परिस्थितियों को देखते हुये अन्ततः राजी हो गई । अब मदीने वापिस जाने की ताव किसे ? वहीं पर मिट्टी के ढेर बनाकर दस्तरखान बनाये गये और उन पर खजूरों, मक्खन और दही की दावत उड़ाई गई । नई दुल्हन को संवारा गया और मौहम्मद उसे एक खेमे में ले गये तथा मौहम्मद के विश्वासी लोगों ने उनके खेमे के आसपास पहरा दिया कि कहीं बेदीन औरत बिगड़ कर गुस्से में अपने पति का बदला न

चुका बैठे ? मगर ऐसा नहीं हुआ।

उस स्त्री के माथे पर जख्म का पुराना निशान था। जब मौहम्मद ने उस जख्म के बारे में पूछा तो उसने जवाब दिया कि मैंने एक दफा रात को ख्वाब में अपनी गोद में गिरते हुए चाँद को देखा और इस ख्वाब का माजरा मैंने अपने पति से कह दिया, खाविन्द को शक हो गया और गुस्से में भरकर कहने लगा कि -

हरामज़ादी- पैगम्बर के साथ शादी करना चाहती है ?

बस ! फिर क्या था उसने गुस्से में आकर जोर से मेरे माथे पर कोई लोहे की सींक दे मारी जिससे यह घाव पैदा हो गया।

पाठक ! कुछ समझे, जिसके दिल में पहले से ही मौहम्मद बसा हो उसकी नेक चलनी के लिए क्या कहा जावे ? मौहम्मद खैबर से मदीने वापस आया तो वहां फिर मौहम्मद ने अबूसफियां की लड़की "उस्महबीबी" को अपनी बीवी बनाया था।

सन् ६२६ ई० में मौहम्मद ने काबा का हज किया। यह मौहम्मद का पहला हज था। जिसकी मन्जूरी काबा के पुजारियों ने मौहम्मद को दी थी इस मौके पर भी मौहम्मद ने अपनी करतूतों से हाथ न खींचा।

"मेमूना" नामक उसके चचा अब्बास की विधवा स्त्री वहां मौजूद थी जिसकी उमर २६ वर्ष की थी और वह रिश्ते में भी मौहम्मद के नजदीक की थी, इसीलिए अपने चचा के कहने सुनने पर मौहम्मद ने उसे भी अपने घर में रख लिया। मदीना की मस्जिद में जहां पहले नौ कोठरी थीं अब दसवीं भी तैयार हो गई। यह तो

मौहम्मद की मनकूहा (ब्याहता) बीवियाँ थीं जिनको कुरान की रूह से मौहम्मद ने दाहिने हाथ से हासिल किया था, बाकी जो लौंडियाँ (रखैल) थीं वह सब इनके अलावा थीं।

मारिया

सन् ६२८ ई० में मौहम्मद ने अपना गवर्नर लकोकस के पास भेजा परन्तु लकोकस ने मौहम्मद के पैगम्बरी वाले दावे को मन्जूर न किया, हाँ ! मौहम्मद से दोस्ती और खेरख्वाही का रिश्ता कायम करने पर जरूर राजी हो गया, उसने दो लौंडियां भी मौहम्मद को भेजीं उनमें से एक का नाम "मारिया[1]" था।

मारिया को मौहम्मद की अन्य बीवियों की तरह मस्जिद की कोठरी में जगह न मिली। क्योंकि यह लौंडी थी, उसके लिए एक अलग से बाग तैयार किया गया जहां मौहम्मद कभी-कभी जाते थे और उसके साथ समय बिताते थे। मारिया के बारे में मौहम्मद पर एक तोहमत (आक्षेप) लगायी जाती है कि लौंडियाँ रखना कुरान की रूह से जायज[2] है ? मौहम्मद के घर में लौंडियां थीं उन पर न मौहम्मद की बीवियों ने ऐतराज किया और न मौहम्मद के पीरों (अनुयाइयों) ने।

एक दफा कहीं से तीन लौंडियाँ आईं तो मौहम्मद ने १-१ लोंड़ी अपने ससुरों अबू बकर और उस्मान तथा एक अपने दामाद अली

[1] हदीस मुस्लिम तफसीर हुसैनी।
[2] सूरये निसाँ रकूब-३।

को बतौर भेंट के दीं, आज की दुनियाँ उसे शरमनाक ढिटाई ही कहेगी, कि अपने दामाद और ससुरों के साथ ऐसा मजलिसी याराना-बर्तावा ? हम तो इस पर मौहम्मद के लिए शाबासी ही देंगे, क्योंकि यह एक जुर्रत से ज्यादा हिम्मत का काम था । खुद भी खुश, दामाद भी खुश और ससुर भी खुश, वाह ! वाह !! शाबास मौहम्मद !

हिन्दुस्तान में खुसर (ससुर) पिता के दरजे का होता है और दामाद बेटे के दरजे पर । इस प्रकार इज्जतदार बुजुर्गों और अजीजों को लौंडियां देना कोई भी भलामानस भला नहीं कहता लेकिन उस जमाने में अरब के कुछ तौर तरीके ही ऐसे थे, कि जब खुदा (खुदा के कलाम) ने खुदा के फरिश्ते की शहादत (गवाही) से एक निकाह सातवें आसमान पर जायज कर दिया तो फिर दुनिया में कौन ऐसा गैर मुस्लिम (काफिर) है जो इस्लाम के पैगम्बर पर एतराज करे कि यह तो तुमने नाजायज काम किया ? परन्तु गजब तो यह है कि अब मुसलमानों को भी मौहम्मद के इस तर्ज़ (अमल) का काम खटकने लगा है । सैय्यद अमीर अली इस बात को बगैर डकार लिये शोरबे की तरह पी गये । खैर मौलाना शिबली इसकी हालत ही बदल देते हैं उनकी नजर में मौहम्मद के मकान में यह बात हुई ही नहीं कुरान में एक सूरह आयी है देखिये -

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अ-----गफूरूर-रहीम ॥१॥ कद् फ़-र-ज़ल्लाहु-----हुवल्- अलीमुल्-हकीम ॥२॥ व इज् असर्रन्नबिय्यु-----यलं-अलीमुल्-खबीर ॥३॥ इन् ततूबा द्ल्लाहि-----जालि-क-ज़हीर ॥४॥ असा

रब्बूहू-----सय्यिबातिंव्-व अब्कारा ।।५।।

(कुरान मजीद सुरा तहरीम आयत १ से ५)

अर्थात् या रसूल ! तू क्यों अपनी बीवियों को खुश करने के लिए वह चीज अपने पर नाजायज समझता है, जो अल्लाह ने तुझ पर जायज की - अल्लाह ने तुम्हारी कसमों के तोड़ने की मंजूरी दे दी है । रसूल ने एक राज (भेद) अपनी बीवी को बताया था, उस बीवी ने मौहम्मद की दूसरी बीवी से उस राज के एक हिस्से का जिक्र किया और दूसरा अपने दिल में रक्खा । इस पर अल्लाह ने पूछा कि आपको किसने बतलाया ? तब उन्होंने जवाब दिया, कि- रसूल ने ! उसके बाद अल्लाह ने जो सर्वव्यापक है और सर्वगुण सम्पन्न है कहा कि- अगर तुम दोनों (बीवियां) तौबा करो तो अच्छा अन्यथा रसूल ने अगर तुम्हें तलाक दे दिया, तो उसका अल्लाह उसे तुम्हारी जगह तुमसे अच्छी बीवियाँ देगा जो ईमान लाने वाली होंगी तथा पाक रहने वाली व विश्वास रखने वाली और रोजा रखने वाली होंगी, जिनमें बिना शौहर वाली (रखैल) और वह औरत भी जिनकी पहले शादी हो चुकी हैं अर्थात् बेवा और वह भी जो कुँवारी हैं ।

भाइयों क्या आप बतला सकते हैं कि यह राज़ की बात कौन सी थी जिसे एक बीवी ने दूसरी बीवी पर जाहिर किया ? मौहम्मद ने कौन सी जायज चीज अपने ऊपर नाजायज कर ली ? और उन गरीब बीवियों को अल्लाह से डाट-फटकार क्यों दिलवाई गयी ?

देखिये, हदीसों* में आया है कि- एक दिन जब मौहम्मद की "हफसा" से मिलने की बारी आई तो हफसा पहले ही छुट्टी लेकर नइहर (पिहर) चली गयी और उसके घर (कोठरी) में मौहम्मद ने "मारिया" से घर बसा लिया, उसके रहते-रहते इसी बीच "हफसा" भी अचानक अपने पिहर से वापिस आ गयी, वह मौहम्मद का यह मन्जर देख कर जल भुन गयी कि उसकी आरामगाह एक अविवाहित स्त्री से भरी हुई है, हफसा के इस गुस्से को मौहम्मद तुरन्त ताड़ गया और गिड़गिड़ाते हुए बोला कि अय नेक दिल औरत ! अगर मारिया के इस हाल का जिक्र तुम किसी से न करो, तो मैं यह कसम खाता हूँ कि फिर आगे से मारिया के साथ कभी भी सोहबत (सम्भोग) न होगी और मेरे बाद खलीफा बनने का हक भी तुम्हारे बाप मौहम्मद उमर का होगा।

पाठकों ! बात थी बस ! उस समय टल गई लेकिन "हफसा" को अपने पर काबू न रह सका और उसने इस बात को आयशा से कहा, आयशा एक लज्जावती औरत थी, परिणाम स्वरूप आयशा की निगरानी में बीवियों की एक कौंसिल (सभा) हुई जिसमें सबने मौहम्मद से मुंह फेर लेने का निर्णय लिया।

मौहम्मद पैगम्बर ! और उस पर भी मदीना का एक मात्र बेताज बादशाह ? उसने मन में सोचा कि ये बीवियाँ कौन से खेत की मूली हैं, इनकी ये मजाल ? जो मुझसे रूखाई का बर्ताव करें ?

---

*हदीस मुस्लिम तफसीर हुसैनी।

उसने फौरन ''वही'' इल्हाम वाले हथियार का प्रयोग किया और उसके आधार पर सब बीवियों का बायकाट (बहिष्कार) कर दिया और अपनी दिली ख्वाईश* पूरी करने के लिए तथा जिन्दगी का रंज-ओ-गम दूर करने के लिए तथा बाकी बीवियों को सबक सिखाने के सबब से मारिया के यहाँ डेरा डाल दिया तथा उन बीवियों के वालिदों से कहा कि- लो बिगाड़ लो, जो तुम लोग मेरा कुछ बिगाड़ सको । इस पर बहुत पेचीदा हालत हो गई, उधर अबू बकर नाराज, उमर नाराज, उस्मान नाराज, कि इसने एक लौंडी (रखैल) की खातिर हमारी निकाहशुदा बेटियों से ताल्लुक तोड़ दिया है । महीना भर की जुदाई के बाद मौहम्मद का दिल भी मुलायम हो गया (जो हफ़सा के तेज तरार गुस्से से अच्छी तरह वाकिफ़ था) और कहने लगा कि अल्लाह ने सिफारिश की है कि हफ़सा का कसूर माफ और उसके साथ उसकी सब बहिनों का कसृर माफ ! खुदा-खुदा करके रसूल के घर अमन (चैन) हुआ और आपसी झगड़ा मिटा । ''मारिया'' से खास मुहब्बत होने का एक कारण यह भी था कि उसके पेट से बच्चा पैदा हो गया ।

मौहम्मद के लड़कियां तो थीं लेकिन लड़के होकर मर गये थे, मौहम्मद को वारिस मिला, शायद काम का भी वारिस, जायदाद का भी वारिस, मकदूज़ात का और बड़ी बात तो यह थी कि खानदान की आन बान और शान का भी वारिस । दुनिया में

*इससे साफ पता चलता है कि मौहम्मद साहब बिना बीवी के एक महीना भी नहीं रह सकते थे ।

- ''सम्पादक''

आखिर लड़का (वारिस) कौन नहीं चाहता ? सभी चाहते हैं ।

सैयद अमीर अली कहते हैं कि संभव है कि मौहम्मद ने बाज शादियाँ इसलिए ही की होंगी कि उसे औलाद नरीना (अच्छी सन्तान) पाने की आरज़ू थी, वह आरज़ू भी किसी दूसरी बीवी को हासिल नहीं हुई, अगर हुई भी तो उस लौंडी (मारिया) ही के भाग में पड़ी उसके उस नवजात पुत्र का नाम "इब्राहिम" रक्खा गया जिसे पालने के लिए बकरियों का एक रेवड़ तैनात किया गया ।

एक दिन मौहम्मद अपने बेटे इब्राहिम को आयशा (अपनी दूसरी बीवी) के पास ले गया और उससे कहा कि- देख मौहम्मद की निशानी है या नहीं ? खदोखाल (सूरत- शकल) में रूप रंग में हूबहू मौहम्मद है । आयशा को सौतन के लड़के से नफरत थी । उसने कहा कि इसे किसी और की समता (बराबरी) दो, नाहक में अपनी सूरत की तौहीन मत करो, मौहम्मद ने उसका मोटा ताजा होने का इशारा किया, कि देख कैसा बलवान लड़का है? इस पर आयशा बोली - किसी की खुराक में बकरियों का रेवड़ (गोल) दूध पीने के लिए दे दो तो वह भी फूलकर मोटा ताजा हो जायेगा।

हमने इस बात का जिक्र इसलिए किया है कि बहुत बीवी वालों को शिक्षा मिले । बाप ने औलाद की शक्ल देखकर आँखों से ठंडक पायी, दिल में खुशी मनाई, और नजर में नूर की रोशनी का ज्ञान कर रहा है और उधर बीवी है कि सौत (सौतन) की डाह (द्वेष) से जली जाती है ।

इब्राहिम की बदकिस्मती ही कहिये कि वह भी थोड़े दिन

जिन्दा रहकर माँ-बाप को छोड़कर चल बसा, अल्लाह के रसूल मौहम्मद की आँखें आंसुओं से डबडबा गई, नूर-पीरों, फकीरों ने अर्ज की कि आप तो हमें सब्र करने का पाठ पढ़ाते थे, और आज आपको क्या हुआ ? क्या जिब्राईल फरिश्ते ने और अल्लाह ने आपके ऊपर रहम न खाया ? तब हजरत ने फरमाया और बड़े ही गर्व के साथ पैगम्बरी शान से फरमाया कि- ''आखिर मैं भी तो इन्सान हूँ,'' यहूदी आहजारी से मना करता हूँ यह कौन कहता है कि जजबात (प्रेम) से दिल को खाली कर दो ।

अय मौहम्मद ! मुझ लेखक को तुझसे प्यार है और तुझ पर जाँ निसार है और वह इसलिए है कि तू भी तो आखिर एक इन्सान है, तुझे भी तो औलाद की आरजू है और बेटे के मर जाने का गम है, हाँ ! अगर कुदरत के कानून के मुताबिक तू भी अमल करता और उस परमात्मा के नियम को न तोड़ता तो परमात्मा तेरी भी झोली रक्षा के मोतियों से भर देता ।

हम हैरान हैं कि आखिर इस कतबी लौंडी के माजरे पर लोग क्यों उंगली उठाते हैं ? खुद मुसलमान इसे काले हाथ की तरह जेब में छिपाते हैं हम तो कहते हैं कि-या तो लौंडी रखने की रस्म कुरान से मिटाओ अन्यथा जब यह नहीं हो सकता तो ''हफसा'' का गम और गुस्सा तथा उसका ऊपर कहा गया कथन बिल्कुल जायज है । क्योंकि मौहम्मद की काली करतूतों से उसकी शान व जौजियात में फर्क आ गया था, कि एक अदना सी लौंडी उसके कमरे में रंगरेलियां मनाये ? आयशा का गम व गुस्सा भी जायज

था कि उसकी एक बहन की तौहीन हुई, उसकी जोजियात शौहरपन की तौहीन हुई, यही हक जौंजियात जौरूपन उसका अपना था।

उसका कौन सा हक (जौजियात) मारा गया ? जैनब जब बगैर शादी के भी जायज पत्नी थी तो मारिया क्यों नहीं ? अल्लाह ने उसका भी निकाह पढ़ दिया। जहां दो दिल मिल गये वहां अल्लाह ही काजी है और अल्लाह का फरिश्ता "जिब्राइल" गवाह है इस बात का कि- "मारिया" मौहम्मद की बीवी है अतः बात साफ हुई कि इसमें किसी को भी कहीं भी अंगुली उठाने का मौका नहीं बचता।

नोट - आपको यदि आँ हजरत के जीवन के बारे में पूरी विस्तार से जानकारी चाहिये तो "हजरत मौहम्मद साहब का विचित्र जीवन" पढ़ें ! जिसे पढ़कर आप आश्चर्य चकित रह जायेंगे, यह पुस्तक एक सौ वर्ष से भी ज्यादा पुरानी है।

-"सम्पादक"

बीवियों वाला हज़रत मौहम्मद

सभी हिन्दू लोग श्री कृष्ण को "बांसुरी वाला" कहते हैं। बाँसुरी ही श्री कृष्ण की अजमत (प्रशंसा) है। वृन्दावन के जंगल, गायों के गल्ले, ग्वालों के लड़के और लड़कियाँ, अयाना (अजीब) ब्राँसुरी लिए खड़े हैं, और जंगल की चारों दिशायें गूंज

रही हैं, एक राग है कि जमीन व आसमान पर छाया हुआ है कि ग्वाले मस्त, ग्वालिनें मस्त, गायें मस्त यहां तक की जंगल के पेड़ और पत्ते तक मस्त हैं। यह कृष्ण का बचपन है। जवानी आई तो कंस को मारा और जरासन्ध को मारा, वहाँ भी युद्ध के लिए रणभेरी इसी बांसुरी ने फूंकी थी, परन्तु जब श्री कृष्ण जी बूढ़े हुए तो जवानी की उमंगों की जगह बुढ़ापे ने ले ली। अब वही बाँसुरी, सभ्यता की जय में बिगड़ी को बनाती है भटके हुए (अर्जुन) को रास्ता बताती है। कुरूक्षेत्र के मैदान में और कौन बोल रहा था? यही बाँसुरी तो थी, जिसके शब्द ईश्वरीय शब्द कहलाये जो श्रीमद्‌भगवदगीता के रूप में मौजूद है, इसी भगवदगीता के मानी है, "रहमानी नगमा" यही आज का कृष्ण है, जिन्दा कृष्ण! आँखों के आगे, कानों के पास मौजूद कृष्ण आह!! जिसकी अजमत का एक शब्द कहा और कृष्ण की सारी जिन्दगी का नक्शा सामने आ गया, वह शब्द क्या है? वह शब्द है "बाँसुरी वाला" आह! क्या प्यारा नाम है?

अब आप गुरू गोविन्द सिंह जी को ही ले लीजिये जो "कलंगी वाला" कहलाता है। बादशाह तो इनसे पहले गुरू भी थे लेकिन कलंगी (ताज) सबसे पहले गुरू गोविन्द सिंह जी ने ही रक्खी थी। दूसरे खुद मुख्तयार कहां थे? गुरू ने बाकायदा मैदान मारे और किसी के कब्जे में न आया, यही गुरू का यज्ञ था। यही लड़ाईयां थीं। कुरबानी थी और यही मौत व आजादी थी। खुद मुख्त्यारी एक लफ्ज (शब्द) में यह सारे

वाकयात शामिल हुए हैं जैसे फोनोग्राफ के रिकार्ड शाखा में गीत "कलंगी वाला" कहा है, और गुरू गोविन्द सिंह का मतलब जिद्‌दो जहद और जंगबदल युद्ध क्रांन्ति आदि सब कह दिये।

ऋषि दयानन्द का नाम पंजाब में "वेदों वाले" पड़ने लगा है, ऋषि का काम-वेद, ऋषि का पैगाम-वेद, ऋषि की हयात (जीवन) ऋषि की वफात (मौत) केवल वेद के प्रचार का कारण थी। ऋषि का श्वांस-श्वांस वेदों का मंत्र था। "वेदों वाला" मन भावना, नाम है यह नाम लिया और उसके दिल को पा लिया अर्थात् ऋषि की रूह को समझ लिया।

परन्तु मेरी समझ में नहीं आता है कि मैं अपने प्यारे मौहम्मद को ऐसा कौन सा नाम दूं जिसमें मौहम्मद की जिन्दगी का पूरा फोटो आँखों में उतर आये। मैंने मौहम्मद की जीवनी शुरू से अन्त तक पढ़ी, बड़े ही मजे ले लेकर पढ़ी तथा बड़ी ही मुहब्बत से पढ़ी, हकीकत (विश्वास) से पढ़ी और जानना चाहा कि आखिर वह कौन सा तार है अर्थात् वह ऐसा कौन सा धागा है जिसमें मौहम्मद की जिन्दगी का फल पिरोया जा सके ? जिसमें ख्यालात के नक्शे बन जायें तथा कर्म और वाणी जीती जागती तस्वीरें बन कर हाजिर हो जायें।

मौहम्मद की जिन्दगी का पहला परदा उस समय उठता है जब उसने माई खदीजा के साथ शादी करने की ठानी। इससे पहले की कार्यवाही इस शादी की एकमात्र तैयारी थी, हजरत ने

खदीजा से शादी की और मौहम्मद ''पैगम्बर'' बन गये ।

मौहम्मद की पैगम्बरी को दुनिया में सबसे पहले किसने कबूल किया अर्थात् माना ? उसकी बीवी खदीजा ने । पैगम्बरी में उसकी पीठ सबसे पहले किसने ठोकी ? खदीजा ने । मक्का की अदालत से उसकी रक्षा किसने की ? खदीजा के रसूक ने । मैं कहता हूं कि २५ साल की उमर से लेकर ५० साल तक की उमर तक मौहम्मद की जिन्दगी में अगर कोई कमाल है, तो वह कमाल सिर्फ खदीजा का है । कहते हैं कि मौहम्मद उस वक्त वाकई पैगम्बर था, अगर यह सच है, तो वाकई मौहम्मद की वह पैगम्बरी सिर्फ और सिर्फ खदीजा की ही देन थी ।

परन्तु जब खदीजा मर गई, तो मौहम्मद ने मक्का से हिजरत की, और उसके बाद माई ''सूदा'' से शादी की, ''आयशा'' से शादी की, ''हफसा'' से शादी की । जैनब नं० १ उर्फ-सलमा (बेटे की बहू) से, जैनब नं० २ ''उर्फ हबीबी (दूसरे की बीवी) से, ''मैमना'' से, ''ज्वेरिया'' से, इन सबसे तो शादियाँ की और लौंडी ''मारिया'' को तो यों ही लुभाव में (बिना शादी किये) अपने घर में रख लिया ?

मौहम्मद ५० साल का था जब खदीजा की मौत हो गयी, तथा ६२ साल का था जब वह खुद मर गया । इन १२ सालों के अरसे में जनाब ने १० औरतें कीं, यानी सवा साल में एक औरत! क्या हम मौहम्मद पर बहुत ब्याह करने का दोष मढ़ रहे हैं ? हरगिज नहीं? जुबान जल जाये, अगर एक बात भी मौहम्मद के

हक में विश्वास के विरूद्ध कोई बात जुबान पर आ तो जाये। और महात्मा गांधी* ने उसे "पवित्रता की सृष्टि" कहा है। मौहम्मद आप पाक, उसका ख्याल पाक, तब परमात्मा की पवित्र सृष्टि पर मिस्टर गांधी की बेबाक दृष्टि न पड़ती तो और किस पर पड़ती ? धन्य है ऐसे महात्मा को और उसकी बेबाक दृष्टि को !

हेनरी अष्टम् जो इंगलिस्तान का बादशाह था उसकी सारी उम्र शादी और तलाक में गुजरी उसकी बादशाहत के हालात लम्बे चौड़े थे जिन्हें याद करना भी मुश्किल था आखिर मैंने इस तीर को पकड़ा, उसकी बीवियों के नाम याद कर लिये, उनके हासिल करने और अपने से अलग कर देने के ढंग याद कर लिए इसमें हेनरी की वाकयात से भरी तवारीख (इतिहास) सब याद हो गई।

हेनरी अष्टम् ने ६ शादियाँ की और उनमें ही सारी उम्र खतम की थी, मौहम्मद ने सिर्फ १२ साल में उनसे कहीं ज्यादा शादियां की हैं। बस ! मुहम्मद की जिन्दगी हेनरी अष्टम की जिन्दगी की निस्बत (मुकाबले) में कहीं ज्यादा रंगीन कही जा सकती है। मिसाल के तौर पर किसी लड़ाई में हजरत को फतह हासिल हुई। तो माना गया कि परमात्मा की पवित्र सृष्टि की सुन्दरता आँखों

---

*महात्मा गांधी के द्वारा किये गये- "ब्रह्मचर्य के विचित्र प्रयोग" नामक पुस्तक अवश्य पढ़ें। वह भी मौहम्मद के जीवन से कम दिलचस्प नहीं है। प्रतीत होता है कि मौहम्मद की पवित्र सृष्टि का ही गांधी जी के जीवन पर यह प्रभाव रहा हो !

-"सम्पादक"

के सामने आई है । बस ! फिर क्या था ? वहीं महफिल जम गई, और लड़ाई में जिनके इष्ट मित्र खो गये थे वह तो रो रहे हैं । यतीमों को बाप का गम, विधवाओं को पतियों का गम, परन्तु क्या रंगीला रसूल मातमपुरसी (शोकग्रस्तियों के साथ सहानुभूति) दिखाता है ? हरम (जनानखाना) भी बढ़ाता है, आठों पहर दूल्हा बना हुआ है, दावतें उड़ रही हैं, दो खजूरें खिलाई और बीवी घर में रख ली, कई अभागिनी तो इस खुदायी लहर में सुहागिनी भी बन गई।

हज़रत आयशा मौहम्मद की सबसे प्यारी बीवी फरमाती है कि मौहम्मद को तीन चीजें प्यारी थीं । प्रथम औरत, दूसरे इत्र आदि, तीसरे खाना । खाने पीने की तो कमी ही न रही, रही इत्र आदि की बात ! वह तो इच्छानुसार ही मिला क्योंकि औरतें तो हजरत के लिए पसंदीदा खेल थीं । इन हालातों में अगर मैं अपने इस रंगीले रसूल का "बीवियों वाला" कह दूँ तो क्या वाजिब (उचित) न होगा ? बीवियों वाला कहा और मौहम्मद को पा लिया, मौहम्मद की रूह को पा लिया । उसकी असली रंगीली तस्वीर आँखों के सामने आकर खड़ी हो गयी ।

जैसे कृष्ण "बाँसुरी वाला" है, गुरू गोविन्द सिंह "कलंगी वाला" है, राम "कमान वाला" है, दयानन्द "वेदों वाला" है, वैसे ही मौहम्मद "बीवियों वाला" है जो सब पैगम्बरों की शान है और मौहम्मद की शान उसकी बीवियाँ हैं इसलिए - बोलो ! "बीवियों वाले की जय" ।

मौहम्मद का तजुर्बा

मैं मौहम्मद पर क्यों फिदा हूँ ? क्यों उस हस्ती पर अपनी जाँ निसार करता हूँ ? क्या इसलिए कि उसने १२ बीवियाँ की थीं ? नहीं-नहीं, भाइयों मैं आप लोगों को आगाह (खबरदार) कर देना चाहता हूँ कि बीवियों से घर भर लेना कोई बुजुर्गी नहीं है । हम पहले ही कह आये हैं कि यह थूक मुहम्मद के लिये कड़ुवा घूँट था बल्कि मौहम्मद की बड़ाई उसमें है कि उसने इस कड़वे घूँट से दवाई का काम लिया । ज्यों-२ तजुर्बा बढ़ा त्यों-२ बहुत सी बातों का कायल होता गया । अर्थात् अपनी गलती मानता गया । पहले तो मोमिनों की बीवियों पर संख्या की कोई क़ैद न थी परन्तु बाद में चार की आज्ञा दी, देखिये-

व इन् खिफ्तुम् अल्ला तुक्सितू------अदना अल्ला तअूलू ।।३।।

(कुरान मजीद सूरये निसा-आयत ३)

इस पर भी यह शर्त लगाई कि- "अगर तुम उन्हीं में इन्साफ कर सको तो तभी इतनी बीवियाँ करना"। यही नहीं इसी सूरा में ही नहीं बल्कि इसी साँस में कहा है कि- "इन्साफ (न्याय) न कर सकोगे "। भाइयों मैं कहना चाहता हूँ कि यह बहुत सी शादियों की रूकावट न थी तो और क्या था ? अपने आप तो बुढ़ापे से मजबूर था, कि जिस्म (शरीर) के साथ कल्पना शक्ति भी क्षीण हो गई थी परन्तु जो आदत पड़ गई, उसके लिए क्या किया जावे ? उसे इस उम्र में बदलना बहुत मुश्किल था हाँ ! अपने अनुयायियों के लिए "मन न कर्दम

शुभा हुजूर व कुनके'' (मैंने तो परहेज* नहीं किया तुम करना) का मसला छोड़ गया और आप भी अगर पहिले जन्म की कार्यवाहियों को याद कर दूसरा जन्म लेता तो एक से अधिक स्त्रियां रखने में कानों पर हाथ रखता । क्या ! ''मारिया'' का मामला उसे याद न था ? जब सारी कीं सारी बीवियों ने इकट्ठे होकर साजिश रच के बूढ़े की नाक में दम कर दिया था । खाना खराबी अलग, इज्जत की बरबादी अलग, फिर यह भी खैरियत थी कि किसी स्त्री से लड़का पैदा नहीं हुआ था वरना इब्राहिम का आयशा के सामने लाया जाना और उसका उसकी सूरत शकल देखकर नाक भौं चढ़ाना ! अक्लमन्दों को इशारा ही काफी है, अली और आयशा में भी एक वाह (घृणा सूचक शब्द) जो मौहम्मद की छाती में रोजाना खटका करता था उसे मालूम था कि मैं अपने दीन के मकल्लिदों (अनुयायियों) को एक घुन लगा चला हूँ जो उन्हें धीरे- धीरे बरबाद कर देगा ।

इस पर सवाल हो सकता है कि साफ शब्दों में अधिक बीवियाँ करने की रूकावट क्यों न कर दी ? परन्तु हजरत की

---

*जिन्दगी में कुछ व्यक्ति दूसरे को ठोकर खाते हुए देखकर संभलते हैं, कुछ स्वयं ठोकर खाकर सीखते हैं और दूसरों को शिक्षा दे जाते हैं कि संभल कर चलना, वही बात यहां लागू होती है, इसके बावजूद भी हमारे मुसलमान भाई नहीं मानते, भाई दुनिया का कोई भी डाक्टर इलाज करने से पहले सारी दवाई पहले स्वयं नहीं खाता, परन्तु हमारे प्यारे मौहम्मद ने सिर्फ दवाई खायी ही नहीं बल्कि उसका नतीजा भी भुक्ता, तभी तो यह शिक्षा दी !

''सम्पादक''

ऐसी साफगोई (स्पष्ट भाषण) में अपनी मिसाल मानय (रूकावट डालने वाली) थी। स्वयं १२ बीवियाँ करने वाला दूसरों को शिक्षा दे कि तुम एक से ज्यादा न करो, कुछ हद से ज्यादा जुर्रत (ताकत) का काम था। उसे अपनी पैगम्बरी की फ़जीलत (बुजुर्गी) आम मुसलमानों से तिगुने की आज्ञा तो दी गई इससे ज्यादा की "खातिमुलमर सलीन" (आखिरी पैगम्बर) को आज्ञा देना उसकी खास शान भी तो नहीं हो सकती थी।

हम सैयद अमीर अली के साथ सहमत हैं कि इस आयत के कुछ मायने नहीं। अगर इसमें ज्यादा शादी करने की रोक टोक नहीं, हाँ! शब्दों में ढील रह गई, जिसका बुरा नतीजा आज तक इस्लाम उठा रहा है। मुल्ला इन्साफ के माने (अर्थ) लेते हैं "खाने पीने का प्रबन्ध कर देना" हालांकि सैयद अमीर अली इस शब्द से मुहब्बत की मसाबात (बराबरी) दिली जोश तक में रूरिआयत न रखना आदि-२ मुराद (आशय) लेते हैं उसका कौल (कथन) है कि ऐसा न्याय मनुष्य शक्ति से बाहर है। इसलिए कुरान की यह आयत "बहु विवाह" की स्पष्ट रूकावट है। हम "सैयद अमीर अली साहब" के ख्याल को सही मानते हैं। वह इसलिए कि मौहम्मद को इस उमर में हूरों की याद भी नहीं आई, जबकि दूसरी तरफ जमील जो हूरों से तंग आया हुआ बहिस्त में भी कानों पर हाथ धरता है।

अगर अहले इस्लाम मौहम्मद की हिदायत (नसीहत) पर अमल नहीं करते और फकीरों की तशरीही (साफ ब्यानी) ने

मौहम्मदी शादी को एक बहुत पेंच दरपेंच मसला (विचारणीय विषय) बना दिया है तो इसमें जिम्मेदारी कुछ तो अहले इस्लाम की अपनी सभ्यता की कमजोरी पर है जिन्होंने खलीफाओं की केन्द्रीय लोलुपता के लिहाज में आकर जायज को नाजायज करार दे दिया और फिर इस रिवाज का बहुत बुरा फायदा खुद उठा रहे हैं और कुछ नसीहत में इशारा तक ही सन्तोष किये जाने का अवगुण है । तो भी इस सभ्यता के लिए हम मौहम्मद की तारीफ किये बिना नहीं रह सकते और अपने मुसलमान भाइयों को सलाह देते हैं कि- इस "रंगीले रसूल" की जिन्दगी से नसीहत (शिक्षा) हासिल करें और उसकी दोस्ताना शिक्षा पर उसके शब्दों पर उल्टे सीधे स्वप्नफल (इल्हाम) पर अमल न करें ।

मुझे मौहम्मद पर क्यों यकीदा (विश्वास) है ? क्या इसलिए कि उसने अपने हमजिन्सों (अनुयाइयों) को औरतों के तलाक की इजाजत दी है और मैं उसका हमजिन्स हूँ । नहीं ! नहीं !! बल्कि तलाक की इजाजत से तो शादी एक आरजी (बनावटी) रिश्ता रह जाता है और गृहस्थी का प्रबन्ध स्थाई रूप से नहीं होता ।

बेगम साहिबा भोपाल ! का तजुरबा जो उन्हें अरब के हज करने के दौरान अरब की औरतों के बारे में हुआ है वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जब शादी बच्चों का खेल हो तो उसमें गम्भीरता आ ही नहीं सकती यह कारण है कि बेगम साहिबा को अरब में बहुत कम ऐसी औरतें मिली जिन्होंने दो से कम पति किये हों बल्कि इसके विरूद्ध १०-१० पतियों की घरवालियाँ भी देखने में आयीं । जब एक जाति (विशेष) को तलाक की खुली

छूट दे दी जावे और दूसरी को पतिव्रता रहने का पाबन्द किया जावे, तो वह दूसरी (पतिव्रता) भी अपनी मुखालिसा (प्रेमालाप) का बहाना निकाल ही लेगी।

हमें देखना यह है कि मौहम्मद इस बारे में क्या कहता है ? कुरान में पहला जिक्र औरत का वहां आता है जहां उसे मंजूरी देने की ताकीद (जिद) की गई है। देखिये कुरान मजीद की सुरा निसा आयत १२७ मैं पैसे देकर अस्तित्व खरीदने में कोई पाप नहीं समझा। अतएव जबरदस्ती से कुछ अच्छी ही सूरत है। अस्तित्व की कीमत लगाई है, यही सही रसूल के जीन्स अनास (प्रिय वस्तु) पर अगणित रहमत है, यह हुई रहमत नम्बर एक। इसी को अरबी जुबान में "मुता" कहा गया है। ईरान में अब तक इसका रिवाज है, लेकिन इरानियों का यह गुनाह मौहम्मद के मत्थे नहीं मढ़ा जा सकता, क्योंकि मौहम्मद ने गुल मौहम्मद होने में सुधार किया काफी दूर दृष्टि से काम लिया, अन्यथा ईरानियों ने तो बस ! एक आयत पढ़ी और वहीं गुलमौहम्मद हो गये।

मौहम्मद ने इस बाबत आगे तरक्की की, शादी की, इस आरजी (बनावटी) क्षणिक रिश्ते को ज्यादा समय वाला बनाया, यहां तक कि तलाक पर अददें (संख्या) लगा दी ताकि कोई मियाँ अगर अपनी बीवी से रूठ गया हो और उसका दिल तलाक के बाद भी दोबारा उसी की तरफ चला जाये तो कहीं कमान से निकले हुए तीर का उदाहरण न हो जाये इसलिए साफ कह दिया कि पहले तीन तलाकों में हर एक के बाद तीन-तीन माह तक बगैर शादी किये रहना चाहिये परन्तु यह कानून सिर्फ औरतों के

लिए है, मर्दों के लिए नहीं । वह अगर दो भी कर लेगा तो भी कुरान की हद (सीमा) में ही रहेगा, एक आयत की न सही दूसरी आयत की सही । क्या खरा मजाक है ? देखिये कुरान मजीद की सुरा बकर आयत २३० में कहा गया है-

यही नहीं फिर "हलाला" की कैद (पाबन्दी) लगाई है कि अगर कोई नटखट शौहर ऐसा ही हो कि बार-बार तलाक देता जाये तो उसे तीसरी बार यह काम करते हुए कुछ झिझक हो, अतः कानून बना दिया कि तीसरे तलाक के बाद बीवी अपने खाविन्द से उस समय ब्याही जाये जब उसकी निस्बत (सम्भोग) दूसरे आदमी से हो जाये, यही नहीं एक साथ बसंग (एक बिस्तर पर रात गुजार लें) भी कर लेवें ।

लोग कहेंगे कि यह रस्म तो लज्जाहीन है "सैयद अमीर अली" लिखते हैं कि-

यह अरब की शर्म (लाज) को उकसावा देने के लिए है । रसूल का मतलब यह था कि दो से ज्यादा तलाक किसी औरत को न मिलें ।

"हलाला" अमल में लाया जायेगा यह कयास (ख्याल) तो खुदा के रसूल मौहम्मद को कभी हुआ ही नहीं । हमें सही बात मानने में कुछ उज्र नहीं हम नाहक में अपने मुसलमान भाइयों को हलाला जैसी लज्जाजनक परम्परा का पाबन्द नहीं देखना चाहते । यद्यपि हमारी समझ में इस बुरी रस्म के अदा किये जाने की कुछ मिसालें मौजूद हैं । गलती कानून बनाने में हुई है, मौहम्मद की नीयत साफ थी, इसमें उसका कुछ भी कसूर नहीं है ।

सैयद अमीर अली लिखते हैं कि-

इस आयत के आगे फिर एक और आयत निकाह के अध्याय में ही आई है। इससे "हलाला" के हुक्म को रद्द करना ही समझना चाहिए, यह रबायत आनरेबुल की अकेली राय है। लेकिन हमारी सर आँखों पर ! हम तो सारे कुरान को एक तरफ से मन्सूख (रद्द) करने को तैयार हैं, उनके अपने कुरानी भाई उनकी सलाह मान लें तो "हलाला" से छुट्टी हो भी जाये तो भी तलाक की बला तो ज्यों की त्यों सिर पर ही सवार रही, ज्यादा देर न सही दो ही दफा सही। वह अलबत्ता कुछ बुराइयों का कारण है। हजरत ने खुद जैनब (अपनी पुत्र वधु अर्थात् अपने बेटे जैद की बहु) को तलाक दिलवाया था। कहकर न सही, इशारों से ही सही जिसका कुरान ने सारा भेद खोल दिया कि उस समय हज़रत के दिल पर कुछ और ही कैफ़ियत गुजर रही थी। जुबान के बयान से वह कैफियत (दशा) बाहर थी हजरत दिल ही दिल में अपनी इस हरकत से पछताये कि परदे की पावन्दियाँ सब इस बात की गवाह हैं कि हजरत को अपनी और जैनब की बेबाक (निडर) नजर शाक (असह्य थी)। उसी बेबाक नजर का ही तो वह कमाल था जो तलाक का कारण बनी थी।

हजरत अपनी बीवियों से भी तो नाराज हुए थे जिसके कारण महीने भर तक उन्हें अपने हिज्र (जुदाई) में और अपने को उनके हिज्र में तड़पाया था। उस समय तलाक क्यों न दिया ? बल्कि उल्टा उन सभी बीवियों पर बहुत बिगड़े और अल्लामियाँ की मारफत चिट्ठी पत्री यानी सन्देश भेजे और तलाक की धमकी भी दी लेकिन तलाक नहीं दिया, रबायत (पाठ) इस प्रकार है कि-

"जब सूदा बूढ़ी हो गई तो हजरत उसे तलाक देने पर तैयार हो गये लेकिन सूदा ने अपना नम्बर आयशा के लिए बदल दिया, और अल्लामियाँ की सिफारिश से मौहम्मद तलाक की गुनाह से और सूदा बेकसाना बारीं के अजाब (पाप) से बच गई"।

"मुस्लिम जिल्द रकू"

असल में मौहम्मद तलाक को बुरा मानते थे । अजी एक हदीस मौजूद है और हम तो कुरान को भी हदीस ही समझते हैं क्योंकि अल्लामियाँ को कोई चीज ऐसी नाखुश नहीं करती जैसी अपनी घरवाली को तलाक देना अर्थात् कोई ऐसे खुश नहीं करती जैसे गुलाम को आजाद करना ।

"इब्नमाजा अवावाबुल निकाह"

हजरत ने मरते दम तक खुदा को खुश रक्खा, हजरत ने जी भर कर बीवियाँ की और उनमें से एक को भी तलाक नहीं दिया . वाह ! आले मौहम्मद ! उम्मत (धर्मानुयायी) मौहम्मद !! मौहम्मद की अक्ल पर पास (निरीक्षण) करो । तलाक नाजायज ! तलाक नाजायज !! तलाक बिल्कुल नाजायज !!!

नोट

अब आप मेरे प्यारे नवी हज़रत मौहम्मद साहब जिन पर मैं दिल-ओ-जान से फिदा हूँ उनके बारे में विशेष जानकारी व उनके रंगीले जीवन के विशेष अनुभवों का अवलोकन भी अगले पृष्ठों में करें ! धन्यवाद !!

-"सम्पादक"

कौसे कज़ा (इन्द्रधनुष)

पाठक ! तूने "रंगीले रसूल" की जिन्दगी के कई रंग मुलाहिजा (जानकारी) किये । क्या कोई रंग तुझ पर भी चढ़ा ? मौहम्मद तजुरबेकार (अनुभवी) पैगम्बर था, उसके तजुरबे से फायदा उठा । देख ! रंगीले का रंग एक नहीं ? बल्कि पूरा कौसेकज़ा (इन्द्रधनुष) है। जिसमें सातों रंग मौजूद हैं ।

१. पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करिये, जैसे मौहम्मद ने अपनी जिन्दगी के २५ वर्ष ब्रह्मचर्यपूर्वक गुजारे, मगर हाँ कभी दिल में काली रात के शुगल (काम वासना सम्बन्धी मनोरंज़न) का ध्यान न लाना ।

२. अपने जीवन में भूल कर भी चालीस वर्ष की बुढ़िया से शादी न करियो, बल्कि अगर किसी बुजुर्ग स्त्री की गोद में लेटना ही हो व अपने (यतीमी) अनाथपन का गम मिटाना ही हो तो उसे माँ बना लीजियो परन्तु बीवी कदापि नहीं ।

३. किसी खेलती गुड़िया से शादी न करियो, नहीं तो गुड़िया खेलती होगी और अगर पीछे (विधवा के रूप में) रही तो सिर को पकड़ कर रोवेगी, हाँ ! अगरचे उस पर रहम आ ही जावे तो उसे अपनी लड़की बना लीजियो ।

४. बहू अपने लड़के की बीवी हो या गोद लिए हुए (मुतबन्ने) की बहू हो उसे अपनी लड़की ही समझियो नहीं तो नाहक में ही टाट के परदे डलवाता फिरेगा । तथा दुनियाँ भर में

हुस्न पर परदे और पहरे लगवाता फिरेगा।

५. लौंडी जायज नहीं होती उसकी औलाद को बीवियाँ तस्लीम (स्वीकार) नहीं करतीं, उसके सुहाग से भी जलती हैं और दूल्हे की इशरत (भोग विलास) में दखल देती हैं।

६. बीवी एक से ज्यादा अजाब (झगड़ा), घर का अजाब, बाहर का अजाब, रूह का अजाब, न खिलवत (तनहाई) में चैन न जलवत (महफिल) में आराम, जो आपस में लड़ें तो आफत। जो एका (संगठन) करें तो कयामत।

७. जैसे अपनी बेवा को दूसरों की माँ कहता है। नहीं ! नहीं !! बल्कि अल्लामियां से कहलवाता है। ऐसे ही दूसरे की विधवाओं को भी अपनी मायें समझिये, यह "वही" है अर्थात् यह अल्लामियां का हुक्म है। अच्छा हज़रत अब रूखसत अर्थात् आज्ञा दीजिये, अब रसालत अर्थात् पैगम्बरी के नाटक का यह अद्‌भुत दृष्य खत्म हुआ, इन्सा अल्ला ! जिन्दगी रही तो फिर कभी किसी दूसरे दृश्य को लेकर हाजिर होंगे, अच्छा ! खुदा हाफ़िज़ !!

॥ इति ॥

नोट :-

पाठक ! अभी तूने अपने प्यारे रसूल के अमूल्य अनुभवों का लाभ उठाया, अब आगे अपने प्यारे, रंगीले, छबीले और रसीले रसूल की रंगीली बातों से भी तो लाभ उठा ताकि तेरा यह मनुष्य जीवन सफल हो सके।

रंगीले रसूल की कुछ रंगीली बातें

१. एक बार हज़रत से एक शख्स ने बड़ी ही हसरत भरी निगाहों से पूछा-

या रसूल- ए-अल्लाह ! मैं औरतों का बड़ा हरीस (भूखा) हूँ इसलिए उन्हें औंधा (उल्टा) डालकर भी जमाअ (संभोग) करता हूँ इसमें आप क्या फरमाते हैं ? इसी सवाल के वास्ते हजरत के द्वारा तभी एक आयत नाज़िल हुई कि-

निसा उकुम् हरसुल्लकुम्--------बश्शिरिल्- मुअ्मिनीन्

(कुरान मजीद सुरा बकर आयत २२३)

अर्थात् औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं उन पर, जिधर से चाहो उधर से जमाअ (संभोग) करो'' ।

हजरत ने यह भी फरमाया कि-

''अपनी ओर से चित्त-पट अर्थात् किसी भी स्थिति में जमाअ (संभोग) करना दुरूस्त है'' ।

(दरमन्सूर जिल्दअव्वल मतबुआ मिस्र सफा २६२)

२. एक औरत ने हजरत से पूछा कि-

हजूर ! हमारा शौहर हमसे चित्त-पट दोनों तरफ से जमाअ (संभोग) करता है क्या यह वाजिब है ? तब हजरत ने फरमाया कि-

''क्या हरज है अगर सुराख वाहद (एक) हो'' ?

३. एक व्यक्ति ने हुजूर से पूछा कि हाथ से काम अर्थात्

हस्तमैथुन करने पर क्या रोजे को जलक नहीं लगता अर्थात् रोजा नहीं टूटता ? तब हजरत ने फरमाया कि-

"ग़ैरइन्ज़ाल (वीर्य न निकलने की स्थिति) में जायज है"। आगे फिर इसी सवाल के जवाब में हजरत ने यह भी कहा है कि-

"सोहवत तेज करने के हिसाब से तो जायज नहीं। हाँ अगर तस्कीन सोहवत (संभोग) की तसल्ली की गरज से किया जाये तो जलक लगाने वाला (हस्त मैथुन करने वाला) गुनहगार न होगा । तथा जब किसी चौपाये वामियत से जमाअ (संभोग) किया जाये और खलास न हो तो उस स्थिति में रोजा फासिद नहीं होता अर्थात् रोजा नहीं टूटता ।

(दरमन्सूर सफा २६२ फतावी-
काजी खाँ जिल्दअव्वल-किताबुलसोम-फसलखामिस)

४. एक रोज हजरत की खिदमत में सफबान बिनमुअतल की बीवी उस वक्त हाजिर हुई जब हजरत रजीउल्ला भी वहाँ हाजिर थे, तब उनकी बीवी ने पूछा-

या रसुलल्लाह ! जब मैं नमाज पढ़ती हूँ, तो मुझे जमाअ (संभोग) न कराने पर नमाज नहीं पढ़ने देता, मारता है । जब रोजा रखती हूँ तो जमाअ (संभोग) करके अफतार (खण्डित) कर देता है रोजाना सुबह तक मशगूल जमाअ (संभोग में व्यस्त) रहता है । इस वाकया को सुनकर हजरत ने फरमाया, कि-

"कोई औरत बिना इजाजत शौहर के रोजा नमाज न रक्खे"।

(तसवीसुलशहाह जिल्दशाह ४ सफा.४८)

नोट : यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि शौहर जो भी जायज या नाजायज कुछ भी करें वह सब दुरूस्त है उल्टा औरत को ही नसीहत दी गई कि बिना शौहर की इजाजत के वह रोजा-नमाज अर्थात् खुदा की इबादत भी न करे। वाह ! हज़रत !! क्या इन्साफ है ? सुभानल्लाह !!

५. एक व्यक्ति ने हजरत मोहम्मद से अरज किया कि हजूर अगर मर्द केवल गैरइन्ज़ाल (बिना वीर्यपात हुए) के कारण औरत से जुदा हो जाये तो क्या करे ? इस पर आपने फरमाया कि-

"सिर्फ (लिंग को) जाकर धो डाले और वजू (हाथ धोकर) करके नमाज पढ़ लें"।

पाठक ! अब तो तूने एक महान अनुभवी पैगम्बर के महान अनुभव भी प्राप्त कर लिए, इसलिए अब तो कम से कम तहेदिल से एक बार जोर से कह दे कि-

बोलो अल्लाह तआला के अन्तिम महान अनुभवी, रंगीले, रसीले और छबीले पैगम्बर, जनाब हज़रत मौहम्मद साहब की जय।

॥ समाप्त ॥

नोट : इस पुस्तक में जिन-जिन पुस्तकों के हवाले दिये गये हैं। उन सबको सभी मुसलमान प्रामाणिक मानते हैं।

-"सम्पादक"

विशेष प्रचारित साहित्य

- हफ़्वातुलमुसलमीन
- चमन-ए-इस्लाम की सैर
- तर्क-ए-इस्लाम
- हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?
- कुरान वेद की ठण्डी छाओं में
- रंगीला रसूल
  (हज़रत मौहम्मद साहब की
  "पवित्र" जीवनी)